भारत की महान महिला स्वाधीनता सेनानी

Great Indian Women freedom fighters

भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में महिलाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। स्वतंत्रता के लिये उन्होंने अदम्य साहस और तेज के साथ दमन और अत्याचार के विरूद्ध लड़ाई की।

स्वाधीनता संघर्ष में उनका योगदान उन्नीसवीं शताब्दी से ही आरम्भ हो गया था जब 1817 में भीमाबाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैल्कम को युद्ध में पराजित किया। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के कई वर्ष पहले किट्टूर की रानी चेनम्मा, अवध की बेगम हज़रत महल ने ईस्ट इन्डिया कम्पनी के ख़िलाफ जंग छेड़ी थी।

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका बहुत प्रेरणास्पद थी। रामगढ़ की रानी, रानी जिन्दान कौर, बैज़ा बाई, चौहान रानी, तपस्विनी महारानी ऐसे ही कुछ नाम हैं। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता तो देशभक्ति की अद्‌भुत मिसाल है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाली महिलाएँ किसी वर्ग विशेष की नहीं बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग से थीं। शिक्षित, धनीवर्ग की महिलाएँ तथा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने कन्धे-से-कन्धा मिलाकर देश की आज़ादी की लड़ाई लड़ी।

महिला स्वाधीनता सेनानी

Women Freedom Fighters

The history of Indian Freedom Struggle would be incomplete without highlighting the contributions of women. They fought with true spirit and undaunted courage and faced various tortures, exploitations and hardships to earn us freedom.

Women's participation in the freedom struggle began as early as in 1817 .Bhima Bai Holkar fought bravely against the British colonel Malcolm and defeated him in guerilla warfare. Many women including Rani Chennamma of Kittur, Begum Hazrat Mahal of Avadh fought against British East India company in the 19th century; many years before the "First War of Independence 1857"

The role played by women in the War of Independence (the Great Revolt) of 1857 was greatly inspiring. Rani of Ramgarh, Rani Jindan Kaur, Baiza Bai, Chauhan Rani, Tapasvini Maharani daringly led their troops into the battlefield. Rani Lakshmi Bai's heroism was an outstanding example of real patriotism.

Women took part in different satyagraha movement during the freedom struggle. In the Quit India Movement of 1942, women took part in processions holding meetings, demonstrations and organizing strikes. Young college girls joined secret societies. The Chhatri Sangh started in Kolkata in 1928 was an important training and recruiting ground for future revolutionaries. In Delhi, Roopvati Jain at the age of 17 was in charge of a bomb factory under Chandrashekhar Azad.

Indian women who joined the national movement came from a wide cross-section of the society. They came from educated and liberal families, as well from rural areas, all castes, religions and communities. Women were active both in the moderate and extremist factions.

''भारत की सम्पूर्ण स्वाधीनता तब तक असम्भव है जब तक आपकी पुत्रियाँ आपके पुत्रों के साथ इस संघर्ष में साथ-साथ न खड़ी हों, और सम्पूर्ण बराबरी पर आधारित यह सहयोग तभी सम्भव है जब स्त्रियों में स्वयं अपनी शक्ति के प्रति जागरूकता हो।''

महात्मा गांधी

''स्त्री अहिंसा की प्रतिमूर्ति है। अहिंसा का अर्थ है असीम प्रेम और उसका तात्पर्य है असीमित कष्ट सहने की क्षमता, और यह क्षमता, पुरूष की जननी, स्त्री के अतिरिक्त और किसमें सर्वाधिक है?''

यंग इण्डिया, 17, अक्तूबर, 1929

''यदि अहिंसा ही हमारे जीवन का मूल सिद्धान्त है, तो भविष्य स्त्रियों के ही हाथों में है।''

यंग इण्डिया, 10, अप्रैल, 1931

''यदि अहिंसा ही मानव जीवन का नियम है तो भविष्य महिलाओं के साथ है।'' उन्होंने भारत की असंख्य महिलाओं की आन्तरिक शक्ति का आह्वान करते हुए उन्हें जागृत किया। इसी प्रेरणा से महिलाएँ भी घर की चारदीवारी से निकलकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। गांधीजी चाहते थे कि स्त्रियाँ आत्मनिर्भर बनें। उनका यह मानना था कि ''जब स्त्रियाँ, जिन्हें हम अबला कहते हैं सबला बन जाएँगी तब सभी असहाय भी शक्तिशाली बन जाएँगे।''

महात्मा गांधी

"The full freedom of India will be an impossibility unless your daughters stand side by side with the sons in the battle for freedom and such an association on absolutely equal terms on the part of India's millions of daughters is not possible, unless they have a definite consciousness of their own power."

- Mahatma Gandhi

"Woman is the incarnation of Ahimsa. Ahimsa means infinite love, which again means infinite capacity for suffering. Who but woman, the mother of man, shows this capacity in the largest measure?

-Young India, Oct. 17, 1929

"If non-violence is the law of our being, the future is with women."

Young India, April 10, 1931

Mahatma Gandhi was confident that if non-violence is the law of our being, the future is with women." Thousands of women, some famous and many unnoticed heroines of India learnt the meaning of liberation from him and contributed with all their energy to the struggle for independence. Gandhi has a special reason for encouraging women to be self- reliant; he believed that, "When women, whom we call abala become sabala, all those who are helpless will become powerful."

- Mahatma Gandhi

रानी लक्ष्मीबाई
(19 नवम्बर 1835 – 17 जून 1858)
Rani Lakshmibai
(19 November 1835 – 17 June 1858)

रानी लक्ष्मीबाई की वीरता तथा नेतृत्व ने महिला स्वाधीनता सेनानियों की कई पीढ़ियों को प्रभावित किया है। रानी लक्ष्मीबाई का विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ था तथा उनकी असमय मृत्यु के बाद अंग्रेज़ी शासन ने उनके पुत्र को राज्य के अधिकार से वंचित कर दिया और झांसी को हड़प लिया।

1857 के विद्रोह में उनकी भूमिका अग्रणी थी। युद्धभूमि में वे पुरूष वेषभूषा में जाती थीं और अपने घोड़े की लगाम मुँह में लेकर दोनों हाथों में तलवार धारण करती थीं। स्वयं अंग्रेज़ों ने उनकी वीरता की सराहना की है। यह वीर रानी युद्ध भूमि में ही वीरगति को प्राप्त हुई।

Rani Lakshmi Bai's heroism and superb leadership laid an outstanding example for all future generations of women freedom fighters. She was married to Gangadhar Rao, head of the state of Jhansi. She was not allowed to adopt a successor after his death by the British, and Jhansi was annexed.

With the outbreak of the Revolt of 1857, she fought back. She used to go into the battlefield dressed as a man. Holding the reins of her horse in her mouth, she used the sword with both hands. Under her leadership, the Rani's troops showed undaunted courage and returned shot for shot. Considered by the British as the best and bravest military leader of rebels this sparkling epitome of courage died a valiant death in the battlefield.

झाँसी का किला
The Jhansi Fort

बेगम हज़रत महल
(मृत्यु 1879)
Begum Hazrat Mahal
(Death - 1879)

बेगम हज़रत महल अवध की बेगम थीं। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने जी जान से लखनऊ की रक्षा की और अंग्रेज़ों का कड़ा मुक़ाबला किया।

1857 की क्रांति के अन्य वीर योद्धाओं के साथ भी वह निरन्तर सम्पर्क में रहीं, विशेष रूप से नाना साहब के साथ। जब अंग्रेज़ों ने लखनऊ पर फिर से कब्ज़ा कर लिया और लगभग पूरे अवध को हड़प लिया, तब बेगम को पीछे हटना पड़ा। उन्होंने नेपाल में शरण ली जहाँ वहाँ के प्रधानमंत्री राना जंग बहादुर ने उन्हें आश्रय दिया। 1879 में उनकी वहीं पर मृत्यु हुई।

Begum Hazrat Mahal was the Begum of Oudh. She took active part in the defence of Lucknow against the British

. During India's First War of independence (1857-58), she led her soldiers against the British, and was even able to seize the control of Lucknow. She worked in close association with other leaders of the India's First War of Independence, including Nana Sahib. When the forces under the command of the British re-captured Lucknow and most part of the Awadh, she was forced to retreat. She turned down all offers of amnesty and allowances by the British rulers. Ultimately, she had to retreat to Nepal, where she was offered asylum by the Prime Minister Rana Jung Bahadur. She died there in 1879 and was buried in a nameless grave on the grounds of Kathmandu's Jama Masjid.

लखनऊ 1857 Lucknow

खूब लड़ी मर्दानी
वह तो झांसी वाली रानी थी

– सुभद्रा कुमारी चौहान

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

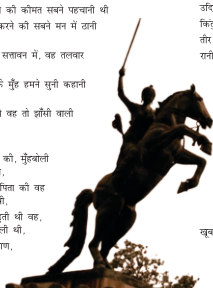

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथायें उसकी याद जवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध–व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार।
महाराष्ट्र–कुल–देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झांसी में,
सुघट बुंदेलों की विरुदावलि सी वह आयी झांसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके–चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुईं, हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
निर्संतान मरे राजाजी रानी शोक–समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।
अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों–बात,
कैद पेशवा था बिदूर में, हुआ नागपूर का भी घात,
उदयपुर, तंजौर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात?
जबकि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र–निपात।
बंगाल, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी रोयीं रनवासों में, बेगम गम से थीं बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपूर के जेवर ले लो लखनऊ के लो नीलख हार'।
यों परदे की इज्ज़त परदेशी के हाथ बिकानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण–चण्डी का कर दिया प्रकट आह्वान।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झांसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपूर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपूर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, तांतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी
इनकी गाथा छोड़, चलें हम झाँसी के मैदानों मे;
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानी में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ दृवन्द आसमानों में।
जख़्मी होकर वॉकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खायी रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अंग्रेजों की, फिर सेना घिर आई थी,
अबकें जनरल स्मिथ समुख्य था, उसने मुहँ की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार–पर–वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे चीरगति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गयी सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुष नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता–नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी
जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगायेगा स्वतंत्रता अविनाशी,

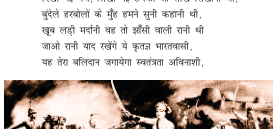

होये चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मरदानी विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

कस्तूरबा गांधी

(11 अप्रैल, 1869 - 22 फरवरी, 1944)

Kasturba Gandhi

(April 11, 1869 – 22 February 1944)

कस्तूरबा गांधी, जिन्हें प्यार से 'बा' पुकारा जाता था, महात्मा गांधी की धर्मपत्नी थी। वे आजीवन अपने पति के साथ स्वाधीनता संग्राम में कदम-से-कदम मिलाकर लड़ीं।

दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में वे स्वाधीनता संघर्ष में महिला सत्याग्रहियों का अदम्य साहस से नेतृत्व करतीं रही। जीवन भर उन्होंने अनेक बार कारावास भुगता। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने प्रवासी भारतीय महिलाओं के साथ रंगभेद के ख़िलाफ सत्याग्रह किया तथा फीनिक्स तथा टॉलस्टॉय आश्रमों का सुगढ़ संचालन भी किया।

भारत लौटने के बाद भी वे राष्ट्रीय आन्दोलनों से सक्रिय रूप से जुड़ी रहीं और बापू के साथ कन्धे से कन्धे मिलाकर लड़ीं। चम्पारन में उन्होंने किसान परिवारों की महिलाओं, बच्चों को साफ-सफाई, अनुशासन, पढ़ाई-लिखाई का महत्व सिखाया। भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 में भी उन्होंने गिरते स्वास्थ्य के बावजूद भाग लिया। पुणे के आग़ा ख़ाँ महल में उन्हें बापू के साथ बन्दी बनाया गया और यहीं पर 22 फरवरी, 1944 को उनकी मृत्यु हुई।

Kasturba Gandhi affectionately called Ba, was the wife of Mahatma Gandhi. She was a leader of Women's Satyagraha for which she was imprisoned. She was arrested twice for picketing liquor and foreign cloth shops, and in 1939 for participating in the Rajkot Satyagraha.

She travelled to South Africa in 1897 to be with her husband. From 1904 to 1914, she was active in the Phoenix Settlement near Durban. During the 1913 protest against working conditions for Indians in South Africa, Kasturba was arrested and sentenced to three months in a hard labor prison. Later, in India, she sometimes took her husband's place when he was under arrest. In 1915, when Gandhi returned to India and went to champaranto support indigo planters, Kasturba accompanied him. She taught hygiene, discipline, reading and writing to women and children.

Stress from the Quit India Movement's arrests and ashram life caused her to fall ill. After contracting pneumonia, she died from a severe heart attack on February 22, 1944. She died in Mahatma Gandhi's arms while both were still in prison in Pune's Agakhan Palace.

सेवाग्राम में बा-बापू

Ba-Bapu in Sevagram

भारत की महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर विदेशी शासन के दुष्प्रभाव के असर को समझते हुए गांधी जी ने ग्रामीण महिलाओं के लिये खादी का आन्दोलन आरम्भ किया। देश की अंसख्य महिलाओं को उन्हें देश के स्वाधीनता संग्राम तथा अर्थिक सक्षमता का प्रतीक चरखा थमा दिया जिसने स्वतंत्रता अन्दोलन को एक नया व्यापक आयाम दिया।

खादी कार्यक्रम में महिलाओं की भूमिका को महत्व द्वारा गांधीजी ने पुरूषों को यह स्पष्ट तौर पर बता दिया कि स्वदेशी आन्दोलनों में स्त्रियाँ पुरूषों के बराबर हैं।

गांधी जी ने इस बात पर जोर दिया कि खादी आन्दोलन पूरी तरह से महिलाओं पर ही निर्भर है।

खादी के माध्यम से गांधीजी ने महिलाओं को आन्दोलन की अग्रिम कतार में खड़ा कर दिया और उनकी शक्ति का आभास दिलाते हुए उनके भीतर जागरूकता पैदा की।

Realizing the negative consequences of the colonial rule on women's economic status, Gandhiji launched the khadi movement which would offer to the masses of women an immediate, open channel for their participation in the national struggle. He used women's role in khadi movement to convince men that women's participation as equals was essential if Swadeshi or boycott movement was to succeed, an argument that he extended later to the winning of full freedom for India, and nation-building.

Gandhiji stressed that the entire khadi movement depended on the women. He said the movement would collapse if the women were to refuse to extend their cooperation to it.

By linking khadi to the women's movement took women to the forefront and unleashed their aspirations to break through purdah and other barriers of inequality.

वर्ष 1905 में बंगाल के विभाजन से देशभर में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ गई। स्वदेशी आन्दोलन में महिलाएँ पुरूषों के साथ जुड़ कर आगे आने लगीं। साहित्य, जन-सभा तथा संगठनों के माध्यम से स्वदेशी आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ लिया और इसमें महिलाओं ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 16 अक्तूबर, 1905 को गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आहवान पर महिलाओं ने राखी बन्धन द्वारा खुद को स्वदेशी आन्दोलन में समर्पित किया।

बंगाल विभाजन : 1905 – आशालता सेन की डायरी का एक अंश

''बंग-भंग विरोध आन्दोलन ने समाज के सभी वर्गों में महत्वपूर्ण बदलाव आए। युवा पीढ़ी के साथ-साथ बुजुर्ग महिलाएँ भी अपनी रूढ़िवादिता से ऊपर उठकर आन्दोलन में भाग लेने लगीं। मेरी दादीमाँ नवशशि देवी मुझे पड़ोस की महिलाओं के पास स्वदेशी आन्दोलन के समर्थन में हस्ताक्षर लेने के लिये भेजा करतीं थीं जिसमें सभी महिलाएँ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का प्रण लेतीं थीं। स्वदेशी आन्दोलन से जुड़ने की यही मेरी दीक्षा थी।''

The partition of Bengal in 1905 galvanized and transformed women's participation in the national movement. Women joined men to protest the division by boycotting foreign goods and buying only Swadeshi goods. The mobilization of women was done through the publication of pamphlets, public meetings and new nationalist associations which emerged during the swadeshi period. Women expressed their feelings by taking part in Tagore's plan of rakhi-bandhan on the day of Bengal partition on October 16, 1905.

From the diary of Ashalata Sen on the Partition of Bengal in 1905

The anti-Bengal partition movement brought a significant change in outlook among the young and old alike. Even elderly ladies, steeped in orthodoxy until recently, started giving active support to the 'Boycott British Goods' movement. My grandmother, Nabashashi Debi send me around to the housewives of the neighbourhood for securing their signatures... pledging boycott of British goods and use of Indian goods. That was my initiation into the 'Swadeshi'movement.

सरलादेवी चौधुरानी
(9 सितम्बर, 1872 - 18 अगस्त, 1945)

Sarala Devi Chaudhurani
(9 September 1872 – 18 August 1945)

सरला देवी चौधुरानी को भारत का पहला महिला संगठन तैयार करने का श्रेय जाता है। वर्ष, 1910 में उन्होंने इलाहाबाद में भारत स्त्री महामण्डल की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य ध्येय था महिलाओं को शिक्षित करना, शिक्षा के अवसर प्रदान करना। महिलाओं में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय था। इस संगठन की देश भर यथा लाहौर, कराची, इलाहाबाद, दिल्ली, अमृतसर, हैदराबाद, कानपुर, बांकुड़ा, हज़ारीबाग़, मिदनापुर तथा कोलकाता में शाखाएँ थीं। इसके प्रभाव से महिलाओं में शिक्षा तथा नेतृत्व गुणों का विकास हुआ और देशभर में अनेक स्थानीय, प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय महिला संगठन तैयार हुए।

Sarala Devi Chaudhurani was the founder of the first women's organisation in India, the Bharat Stree Mahamandal in Allahabad in 1910. One of the primary goals of the organisation was to promote female education, which at that time was not well developed. The organisation opened several offices in Lahore (then part of undivided India), Allahabad, Delhi, Karachi, Amritsar, Hyderabad, Kanpur, Bankura, Hazaribagh, Midnapur and Kolkata to improve the situation of women all over India. After 1919, women experienced in organizing and working in local women's associations, and convinced that women should take the leadership into their own hands, started provincial and national women's associations.

महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1930 में संचालित नमक सत्याग्रह में महिलाओं ने व्यापक स्तर पर भाग लिया। साबरमती से दाण्डी तक की यात्रा में लाखों की तादाद में महिलाएँ इस आन्दोलन से जुड़ गईं। इनमें कुछ प्रमुख नाम हैं सरोजिनी नायडू, मधुबेन पटेल, मृदुला साराभाई, खुर्शीदबहन, कमलादेवी चट्टोपाध्याय तथा अवन्तिका गोखले।

नमक सत्याग्रह के दौरान 80,000 भारतीय बन्दी बनाए गए। जिनमें 17,000 से अधिक महिलाएँ थीं।

जवाहरलाल नेहरू अपनी पुस्तक 'हिन्दुस्तान की कहानी' में लिखते हैं ''सरकारी आदेश की अवमानना करते हुए, घर की सुरक्षित परिधि से भारत की महिलाएँ - धनी, निर्धन, शिक्षित, अशिक्षित, युवती, वृद्धा, बालिका सभी बाहर आकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं और पुलिस की लाठियों, गोलियों का निडरता से सामना किया।''

In the Salt Satyagraha launched by Mahatma Gandhi in March 1930, many women walked to Dandi to break the salt law. Sarojini Naidu, Madhuben Patel, Mridula Sarabhai, Khurseedben, Kamaladevi Chattopadhyaya and Avantikabai Gokhale were some of the prominent women associated with the Dandi March.

Over 80,000 persons were arrested during the Salt Satyagraha. Out of these more than 17,000 were women.

Jawaharlal Nehru in Discovery of India talking on women's participation in the Salt Satyagraha writes, "Here were these women, women of the upper or middle classes leading sheltered lives in their homes, peasant women, working-class women, rich women, poor women pouring out in their tens of thousands in defiance of government order and police lathi."

युवा क्रान्तिकारी महिलाएँ

कल्पना दत्त, कल्याणी दास, वीना दास, शान्ति घोष, सुनीति चौधारी, सुहासिनी गांगुली, उज्जवला मजुमदार, शोभा रानी दत्त, बेला मित्र, उर्मिला देवी शास्त्री, रमादेवी चौधारी, मालती चौधारी, सोफिया ख़ान, महादेवी ताई, ननीबाला देवी, कल्याणी, सुशीला मित्र, लीला नाग उन असंख्य नामों के प्रतिनिधि हैं जिन्होंने देश को आज़ादी के लिये प्राणों की आहुति दी। निर्भीक, समर्पित रूप से इन सबने क्रूर यातनाएँ सही, तकलीफें उठाई परन्तु अपने उद्देश्य से पीछे नहीं हटीं।

कृतज्ञ राष्ट्र उन्हें सदा स्मरण करता है, नमन करता है।

YOUNG WOMEN REVOLUTIONARIES

Nanibala Davi, Kalyani, Sushila Mitra, Leela Nag, Kalpana Dutt, Kalyani Das, Veena Das, Shanti Ghosh, Suniti Chowdhury, Suhasini Ganguly, Ujjwala Majumdar, Shobha Rani Dutt, Bela Mitra, Urmila Devi Shastri, Rama Devi Chowdharuy, Malati Chowdhury, Sofia Khan, Mahadavi Tai, are among the innumerable names, that laid down their lives in the freedom struggle of the country.

They will always be remembered by a grateful nation. They were fearlessly devoted to the cause of independence and braved hardships, imprisonment and even death for it.

सरोजिनी नायडू

(13 फरवरी 1879 – 2 मार्च, 1949)

Sarojini Naidu

(13 Feb., 1879 – 2 Mar 1949)

सरोजिनी नायडू बंगभंग विरोधी आन्दोलन के समय से स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गईं थीं। इस आन्दोलन के दौरान वे गोपाल कृष्ण गोखले, रवीन्दनाथ ठाकुर तथा महात्मा गांधी से मिलीं और आजीवन इन सबसे प्रभावित रहीं। उन्होंने भारतीय महिला को उसकी शक्ति का आभास दिलवाया, रसोई की परिधि लांघ कर सम्मान से जीने की प्रेरणा दी। पूरे देश भर में घूम-घूम कर वे स्त्रियों को उनके अधिकारों से अवगत कराती रहीं।

वर्ष 1925 में सरोजिनी नायडू ने कानपुर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की। 'सविनय अवज्ञा' आन्दोलन में भाग लेने पर उन्हें गांधीजी तथा अन्य नेताओं के साथ बन्दी बना लिया गया। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी तथा इसी कारण से उन्हें फिर महात्मा गांधी के साथ बन्दी बनाया गया। गांधीजी के साथ उनका बड़ा स्नेहपूर्ण संबंध था और वे उन्हें 'मिकी माउस' कह कर बुलाती थीं। स्वाधीन भारत में वे देश की प्रथम महिला राज्यपाल बनीं।

Sarojini Naidu joined the Indian national movement in the wake of partition of Bengal in 1905. She then came in contact with Gopal Krishna Gokhale, Rabindranath Tagore and Mahatma Gandhi. She awakened the women of India. She brought them out of the kitchen. She travelled from state to state, city after city and worked for the rights of the women.

In 1925, Sarojini Naidu presided over the annual session of Indian National Congress at Kanpur. Sarojini Naidu played a leading role during the Civil Disobedience Movement and was jailed along with Mahatma Gandhi and other leaders. In 1942, Sarojini Naidu was arrested during the "Quit India" movement and was jailed for 21 months with Gandhiji. She shared a very warm relationship with Gandhiji and used to call him "Mickey Mouse". After Independence, Sarojini Naidu became the Governor of Uttar Pradesh. She was India's first woman governor.

दान्डी यात्रा: 1930 Dandi March: 1930

द गिफ्ट ऑफ इंडिया

क्या यह जरूरी है कि मेरे हाथों में
अनाज या सोने या परिधानों के महंगे उपहार हों?
ओ ! मैंने पूर्व और पश्चिम की दिशाएं छानी हैं
मेरे शरीर पर अमूल्य आभूषण रहे हैं
और इनसे मेरे टूटे गर्भ से अनेक बच्चों ने जन्म लिया है
कर्तव्य के मार्ग पर और सर्वनाश की छाया में
ये कब्रों में लगे मोतियों जैसे जमा हो गए।
वे पर्शियन तरंगों पर सोए हुए मौन हैं,
वे मिश्र की रेत पर फैले शंखों जैसे हैं,
वे पीले धानुष और बहादुर टूटे हाथों के साथ हैं
वे अचानक पैदा हो गए फूलों जैसे खिले हैं
वे फ्रांस के रक्त रंजित दलदलों में फंसे हैं
क्या मेरे आंसुओं के दर्द को तुम माप सकते हो
या मेरी घड़ी की दिशा को समझ करते हो
या मेरे हृदय की टूटन में शामिल गर्व को देख सकते हो
और उस आशा को, जो प्रार्थना की वेदना में शामिल है?
और मुझे दिखाई देने वाले दूरदराज के उदास भव्य दृश्य को
जो विजय के क्षति ग्रस्त लाल पर्दों पर लिखे हैं?
जब घृणा का आतंक और नाद समाप्त होगा
और जीवन शांति की धुरी पर एक नए रूप में चल पड़ेगा,
और तुम्हारा प्यार यादगार भरे धन्यवाद देगा,
उन कॉमरेड को जो बहादुरी से संघर्ष करते रहे,
मेरे शहीद बेटों के खून को याद रखना!

In Salutation to the Eternal Peace

Men say the world is full of fear and hate,
And all life's ripening harvest-fields await
The restless sickle of relentless fate.
But I, sweet Soul, rejoice that I was born,
When from the climbing terraces of corn
I watch the golden orioles of Thy morn.
What care I for the world's desire and pride,
Who know the silver wings that gleam and glide,
The homing pigeons of Thine eventide?
What care I for the world's loud weariness,
Who dream in twilight granaries Thou dost bless
With delicate sheaves of mellow silences?
Say, shall I heed dull presages of doom,
Or dread the rumoured loneliness and gloom,
The mute and mythic terror of the tomb?
For my glad heart is drunk and drenched with Thee,
O inmost wind of living ecstasy!
O intimate essence of eternity!

राजकुमारी अमृत कौर
(1889 - 1964)
Rajkumari Amrit Kaur
(1889-1964)

विदेश में पढ़ाई पूरी करने के बाद जब राजकुमारी अमृत कौर विदेश लौटी तब वे गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी से मिलीं। यह उनके जीवन का निर्णायक मोड़ था। नमक सत्याग्रह में भाग लेने पर उन्हें बम्बई की जेल में बन्दी बनाया गया। 1937 में भी जब वे सीमान्त प्रान्तों में स्वाधीनता संदेश लेकर गई तो ब्रिटिश सरकार ने उन्हें राजद्रोह के जुर्म में बन्दी बना लिया।

उनका पूरा जीवन देश सेवा को समर्पित रहा। 1931-33 में वे महिला संगठन की अध्यक्ष रहीं। 1932 में उन्होंने संविधान सुधारों तथा भारतीय मताधिकार की संसदीय समिति के समक्ष पैरवी की। 1938 में वे अखिल भारतीय महिला संगठन की अध्यक्ष बनीं। वे हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की पहली महिला सदस्य थीं। यूनेस्को के लन्दन (1945) तथा पेरिस (1946) के अधिवेशनों में वे भारतीय प्रतिनिधिमण्डल की सदस्य थीं। स्वाधीन भारत में उन्होंने केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री का पदभार संभाला। महिलाओं की शिक्षा तथा हरिजन उत्थान के लिये वे जीवन भर कार्यरत रहीं।

After returning to India after her higher studies, Rajkumari Amrit Kaur came in touch with Gopal Krishna Gokhale and later with Mahatma Gandhi. This was a turning point in her life. Her active participation in Salt Satyagraha landed her in Bombay jail. In 1937, to advocate the cause of the Congress she went to Bannu in Northwest Frontier Province, and again she was arrested on the charges of sedition.

During 1931-33 she was the president of the women's association. She testified before the Lothian Committee of Parliament (1932) on Indian franchise and constitutional reforms. The year 1938 saw her as the president of All India Women's Conference. She was also the first woman member of Hindustani Talimi Sangh. In 1945 (London) and 1946 (Paris), she participated in the UNESCO's conferences as a member of Indian delegation. After India attained freedom in 1947 she joined the Central Cabinet as Minister for Health. She was a strong champion of female education and equally concerned with the upliftment of Harijans.

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में राजकुमारी अमृत कौर

Guard of Honour for Dr. Rajkumari Amrit Kaur at All-India Women's Conference, Madras (Queen Mary's College)

वर्धा से 20 अक्तूबर, 1936 को बापू द्वारा राजकुमारी अमृत कौर को लिखे गए पत्र का एक अंश :

''यदि आप महिलाएँ स्वयं अपने स्वाभिमान तथा गुणों को पहचान लें और उनका मानवता के लिये पूर्ण उपयोग करें तो आप उसके स्तर को बहुत ऊपर उठा सकती हैं। परन्तु पुरूष ने बड़े हर्ष के साथ आपको अधीन कर रखा है और परिणाम स्वरूप मानवता का पतन हुआ है। आप कह सकतीं हैं कि बचपन से ही मेरी कोशिश रही है कि महिलाएँ अपने स्वाभिमान को पहचानें और उसका उपयोग करें। मैंने स्वयं भी बा को अपने अधीन करना चाहा था परन्तु बा ने इसे स्वीकार नहीं किया और इसी कारण से मेरे विचारों में भी स्त्रियों के प्रति परिवर्तन आया और उन्हें उनके अधिकार तथा शक्ति के प्रति जागृत करने को मैंने अपना ध्येय बनाया।''

Letter by Mahatma Gandhi to Rajkumari Amrit Kaur from Wardha on October 20, 1936:

If you women only realize your dignity and priviledge, and make full sense of it for mankind, you will make it much better than it is. But, man has delighted in enslaving you, and you have proved willing slaves till the slave and holders have become one in the crime on degrading humanity. My special function from childhood, you might say, has been to make women realize her dignity. I was once slaveholder myself but Ba proved an unwilling slave and thus opened my eyes to my mission.

बापू के साथ with Bapu

कमलादेवी चट्टोपाध्याय
(1903-1990)
Kamaladevi Chattopadhyaya
(1903-1990)

कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने दाण्डी यात्रा में महिलाओं के भाग लेने के विषय में कहा हैं ''महिलाओं ने घरों को हर क़ानून तोड़ने वाले का आश्रय स्थल बना दिया। अपनी आत्मिक शुद्धता से उन्होंने हर संघर्ष को पवित्रता प्रदान की। दुनिया की बड़ी से बड़ी सैन्य शक्ति भी उस संघर्ष का सामना नहीं कर सकती जिसकी बुनियाद घर की पवित्र चारदीवारी में है।''

कमला देवी असहयोग आन्दोलन के समय से स्वाधीन संग्राम से जुड़ गई तथा आजीवन देश सेवा को तथा देश की परम्परिक कलाओं के संरक्षण को समर्पित रही। उन्होंने अखिल भारतीय महिला सम्मेलन बनाया। उनकी सेवाओं के लिये 1955 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

देश की स्वाधीनता तथा देश की संस्कृति के लिये उनकी सेवाएँ चिरस्मरणीय हैं।

Kamaladevi Chattopadhyaya describing women's participation in Dandi March said, "Women turned every house into a sanctuary for the law breaker. They lent sanctity to their act by their purity of spirit. Even the mightiest military power cannot cope with a struggle that has its being in the sacred precincts of the home."

Kamaladevi Chattopadhyaya joined the freedom struggle during the Non-Cooperation Movement. All her life she remained devoted to the cause of India's freedom and the preservation of her cultural roots. She formed the All India Women's Association. She was decorated with Padma Bhushan in 1955.

Her contribution to national freedom movement and her work to save the country's village crafts are immense.

Kamaladevi Chattopadhyaya,
freedom fighter, feminist, founder of Indian Coopertaive Union, and handicrafts pioneer.

सुचेता कृपालानी
(1906–1974)
Sucheta Kriplani
(1906 - 1974)

सुचेता कृपालानी बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में प्रवक्ता थीं और 1936 में भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रूप से जुड़ गईं। वर्ष 1942 में उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश-विभाजन की घोषणा के बाद ही भड़क उठे साम्प्रदायिक दंगों को शान्त करने के लिये जब गांधीजी ने पीड़ित क्षेत्रों का दौरा किया तो वे भी उनके साथ थीं। वे भारत के संविधान सभा की सदस्य थीं तथा संविधान की रचना में उनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान था। 15 अगस्त 1947 को उन्होंने संविधान सभा के स्वाधीनता सत्र में 'वन्दे मातरम' का गायन किया। महात्मा गांधी के कर्मठ सहयोगी आचार्य जे. बी. कृपालानी के साथ उनका विवाह हुआ था।

1963 में उत्तर प्रदेश की तथा देश की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनीं।

A lecturer in Benaras Hindu University, Sucheta Kriplani became involved with the Indian Naitonal Congress in 1936. She came to the forefront during the Quit India Movement. She later worked closely with Mahatma Gandhi during the riots following the partition. She accompanied him to Noakhali in 1946. She was one of the few women who were elected to the Constituent Assembly and authored the Indian Constitution. She became a part of the subcommittee that was handed over the task of laying down the charter for the Constitution of India. On 15 August 1947 she sang Vande Mataram in the Independence Session of the Constituent Assembly.

In 1963, she became the Chief Minister of Uttar Pradesh, the first woman to hold that position in any Indian state.

पति आचार्य कृपालानी के साथ
With husband Acharya Kripalani

अरूणा आसफ़ अली

(16 जुलाई, 1909 – 29 जुलाई 1996)

Aruna Asaf Ali

(July 16, 1909 – July 29, 1996)

अरूणा आसफ अली देशभक्त क्रान्तिकारी महिला थीं और आज भी 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान बम्बई के गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए उनका चित्र हमें रोमांचित कर देता है। उन्होंने दाण्डी यात्रा में भी भाग लिया तथा बन्दी भी बनायी गईं।

8 अगस्त, 1942 को बम्बई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का प्रस्ताव पारित हुआ। ब्रिटिश हुकुमत ने तत्काल महात्मा गांधी सहित प्रमुख राष्ट्रनेताओं को गिरफ्तार कर लिया ताकि आन्दोलन असफल हो जाए। 9 अगस्त, 1942 को अरूणा आसफ़ अली ने शेष सत्र की अध्यक्षता की तथा ध्वज फहराकर आन्दोलन के आरम्भ की घोषणा की। अरूणा आसफ़ अली को उनकी निडरता के लिये 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन की नायिका के रूप में जाना जाता है। 1958 में उन्होंने दिल्ली की मेयर का पद संभाला। जीवन भर वे देश सेवा को समर्पित रहीं।

Aruna Asaf Ali is widely remembered for hoisting the Indian National Congress flag at the Gowalia Tank maidan in Bombay during the Quit India Movement, 1942. She actively took part in public processions during the Dandi March. She was arrested on the charge that she was a vagrant and hence not released in 1931 under the Gandhi-Irwin Pact which stipulated release of all political prisoners.

On August 8, 1942, the All India Congress Committee passed the Quit India resolution at the Bombay session. The government responded by arresting the major leaders and all members of the Congress Working Committee and thus tried to pre-empt the movement from success. Aruna Asaf Ali presided over the remainder of the session on August 9 and hoisted the Congress flag at the Gowalia Tank maidan. This marked the commencement of the movement. Aruna was dubbed the Heroine of the 1942 movement for her bravery in the face of danger and was called Grand Old Lady of the Independence movement in her later years.

In 1958, she was elected the first Mayor of Delhi.

दुर्गाबाई देशमुख

(15 जुलाई, 1909 – 9 मई, 1981)

Durgabai Deshmukh

(July 15, 1909 - May 9, 1981)

दुर्गाबाई देशमुख प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, वकील, समाजसेवी तथा राजनीतिज्ञ थीं। वे संविधान सभा तथा योजना आयोग की भी सदस्य थीं। बचपन से ही वे राजनीति में सक्रिय थीं। 1923 में उनके गृहनगर काकिनाडा में जब कांग्रेस अधिवेशन हुआ तब उनको खादी प्रदर्शनी का इंचार्ज बनाया गया तथा प्रदर्शनी में प्रवेश करने के लिये टिकट न होने पर उन्होंने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को भी रोक दिया था।

महात्मा गांधी के जन-आन्दोलनों में वे सत्याग्रही के रूप में लगातार जुड़ी रहीं तथा कई बार जेल भी गईं।

स्वाधीन भारत में दुर्गाबाई देशमुख योजना आयोग की सदस्य बनीं तथा उन्होंने समाज कल्याण पर आधारित राष्ट्रीय नीति का निर्माण किया। इसी नीति के आधार पर 1953 में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की स्थापना हुई तथा वे इसकी प्रथम अध्यक्ष बनीं।

Durgabai Deshmukh was an Indian freedom fighter, lawyer, social worker and politician. She was a member of the Constituent Assembly of India and the Planning Commission of India. From an early life Durgabai was associated with Indian Politics. When the Indian National Congress had its conference in her hometown of Kakinada in 1923 she was a volunteer and placed in charge of the Khadi Exhibition which was running side by side. Her responsibility was to make sure that visitors to the exhibition were not allowed without tickets, and even forbade Jawaharlal Nehru from entering.

She was a follower of Mahatma Gandhi in India's struggle for freedom from the British Raj, and a prominent social reformer and participated in Gandhi-led Satyagraha activities. British Raj authorities had imprisoned her three different times.

Durgabai Deshmukh was a member of the Planning Commission after Independence, and in that role, she mustered support for a national policy on social welfare. The policy resulted in the establishment of a Central Social Welfare Board in 1953 and she became its first chairperson.

गांधीजी के साथ *With GandhiJi*

श्रीमती सत्यवती
Shrimati Satyawati

श्रीमती सत्यवती ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में पहली बार सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके स्वदेशी का प्रचार किया, जन सभाओं को सम्बोधित किया, पदयात्राओं का नेतृत्व किया।

1934 में वे कांग्रेस सोशालिस्ट फोरम की स्थापक सदस्य बनीं तथा आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया तथा जवाहरलाल नेहरू के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के लिये उन्हें एक वर्ष का कारावास दण्ड दिया गया।

उनके तेजपूर्ण व्यक्तित्व के कारण महात्मा गांधी उन्हें स्नेह से 'तूफानी बहन सत्यवती' कह कर बुलाते थे।

Shrimati Satyawati came into the limelight when she plunged headlong into political activity during the Civil Disobedience Movement at a time when she was a mother of two children. She addressed meetings, led processions, preached Swadeshi and boycott of foreign cloth.

In 1934, she became a founder member of the Congress Socialist Forum and worked shoulder to shoulder with Acharya Narendra Dev, Jaiprakash Narayan, Ram Manohar Lohia and Jawaharlal Nehru. She took part in the Individual Satyagraha of 1940 and was sentenced to one year imprisonment.

As she was quick in her response to the call for freedom struggle, Mahatma Gandhi called her "Toofani Behan Satyawati".

अनुसूया साराभाई
(1885-1972)

Anusuyaben Sarabhai
(1885–1972)

इन्होंने 1920 में अहमदाबाद टेक्स्टाइल लेबर संगठन बनाया जो बाद में महिलाओं के लिये स्वरोजगार संगठन के रूप में बदल गया।

अनुसूया बहन का जन्म 11 नवम्बर 1885 को हुआ था। 1911 में उन्होंने लन्दन स्कूल आर्फ इकोनॉमिक्स में पढ़ाई शुरू की।

स्वदेश लौटने पर उन्होंने गांधीजी के विचार दर्शन पर आधारित मजदूर संगठन तैयार किये। अहमदाबाद के समृद्ध सूती वस्त्र उद्योग को उन्होंने सुनियोजित, सुचारू रूप से संचालित कर देश के वस्त्र उद्योग को नई दिशा दी।

Anusuya Sarabhai was a social and labour activist. She founded the Ahmedabad Textile Labour Association in 1920, which later grew into the Self Employed Women's Association (S E W A) .

She was born on 11 November 1885. In 1911 she went to England and studied at the London School of Economics.

Ahmedabad had about 100 establishments engaged in the weaving of turbans, 50 in the manufacture and sale of carpets and 70 shops producing and marketing silk goods. The seeds of militant but non-violent trade unionism were first sown in the second decade of the twentieth century by 'Anusuyaben' as she was called. She organized Ahmedabad's cotton textile labour along Gandhian lines of thought and worked in close cooperation with other socialists.

''मुझे निडर भारतीय महिलाओं की एक ऐसी तेजस्वी सेना चाहिये जो अपनी तलवार को उसी वीरता से संचालित करेगी जैसी प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर सेनानी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई किया करतीं थीं।''

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, 9 जुलाई, 1943

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा निर्मित इन्डियन नेशनल आर्मी (आई. एन. ए.) की रानी झांसी रेजिमेन्ट एक अभूतपूर्व महिला सैन्य रेजिमेन्ट थी जिसमें 600 वीर महिलाएँ शामिल थीं। इस फौज को नेताजी ने 12 जुलाई, 1943 को बनाया था। 1944 में इस महिला रेजिमेन्ट की सदस्यों ने नेताजी को अपने खून से आवेदन लिखा कि उन्हें युद्ध में शरीक होने दिया जाए।

रानी झांसी सेना इस बात की प्रेरणादायक प्रतीक है कि साधारण स्त्रियाँ भी अवसर मिलने पर असाधारण साहस का परिचय देती हैं।

नेताजी रानी झांसी रेजिमेन्ट के साथ
Netaji with the Rani Jhanshi Regiment

"... I want ... a unit of brave Indian women to form a death-defying Regiment who will wield the sword which Rani of Jhansi wielded in India's First War of Independence in 1857."

Netaji Subhas Chandra Bose speaking at the Padang on 9 July 1943.

The Rani of Jhansi Regiment of the Indian National Army (INA) is one of the most unusual and colourful female-only military units ever created. Initiated by Netaji Subhas Chandra Bose in Singapore on July 12, 1943, about 600 volunteers joined the Regiment.

In 1944, when different units of the Indian National Army were moving to Burma for an assault on Imphal, the girls of the Regiment submitted an application written with their own blood to Netaji requesting him to let them join the assault.

The recruitment of the 'Ranis' for the women's' regiment is an inspiring illustration of what the most ordinary of women can do when given the slightest of opportunities. When news spread in Singapore that such a regiment was to be formed, hundreds of young women from the city-state and from different parts of Malaya offered themselves for training and battle. They belonged to all social classes and communities but were, for the most part, poor or lower middle class South Indian women. The response was so overwhelming that many of them had to be turned away, weeping.

कैप्टेन लक्ष्मी सहगल
(24 अक्तूबर, 1914)
Capt. Lakshmi Sehgal
(October 24, 1914)

1943 में डॉ. लक्ष्मी सहगल ने सिंगापुर में नेताजी द्वारा बनाई रानी झाँसी रेजिमेन्ट की कमान संभाली। उन्होंने जीवन भर देश की सेवा की। नेताजी के नेतृत्व में बनाई गई अर्ज़ी हुकुमते आज़ाद हिन्द सरकार में उन्होंने महिला संगठन मंत्री का पदभार संभाला।

मार्च 1946 में उन्हें गिरफ्तार कर के भारत लाया गया जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ।

वर्ष 2002 में वे राष्ट्रपति पद के लिये प्रथम महिला उम्मीदवार बनीं।

A doctor by profession, Captain Lakshmi Sehgal, at the call of Netaji Subhas Chandra Bose, joined the Rani of Jhansi Regiment in Singapore in 1943. She was the commanding officer of Regiment.

Lakshmi was active both militarily and on the medical front. Later, she became the Minister in charge of Women's Organization in Arzi Hukumate Azad Hind (Provisional Government of Free India), led by Subhash Chandra Bose. In March 1946, she was captured and brought to India, where she was given a heroine's welcome.

In 2002, Captain Lakshmi agreed to contest as a candidate of the Left parties in the presidential elections against Dr A.P.J Abdul Kalam. She was the first woman candidate to contest for the country's highest constitutional post.

मातंगिनी हाज़रा
(1870–1942)

Matangini Hazra
(1870-1942)

मातंगिनी हाज़रा सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय से ही राष्ट्रीय आन्दोलनों के साथ जुड़ गईं थीं। नमक सत्याग्रह के दौरान अलीनान नमक केन्द्र में नमक बनाने पर उन्हें बन्दी बनाया गया। उन्होंने चौकीदारी कर के विरूद्ध आन्दोलन में भी भाग लिया और जेल की सज़ा पाई।

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय मिदनापुर, पश्चिम बंगाल के लोगों ने निर्णय लिया कि वे थाना, अदालत तथा सरकारी दफ्तरों पर कब्ज़ा करेंगे और इस दल का नेतृत्व कर रहीं थीं 72 वर्ष की वीर सेनानी मातंगिनी हाज़रा। पुलिस की गोलियों से भी वे नहीं डरीं और देश की आज़ादी का परचम लहराते हुए शहीद हो गईं। देश की इस महान नारी ने असाधारण वीरता का परिचय देते हुए इतिहास में अपना नाम दर्ज कर लिया।

Matangini Hazra was a Gandhian leader who participated in the Civil Disobedience Movement. She also participated in the Salt Satyagraha, manufactured salt at Alinan salt centre and was arrested for violating the salt act. She also participated in the 'Chowkidari Tax Bandha' (abolition of chowkidari tax) movement. She was sentenced to six months imprisonment and sent to Baharampur jail.

During the Quit India Movement, the people of Medinipur, West Bengal planned an attack to capture the Thana, court and other government offices. Matangini, who was then 72 years old, led the procession. The police opened fire. A bullet hit her arm. Undaunted she went on appealing to the police not to shoot at their own brethren. Another bullet pierced her forehead. She fell down dead, a symbol of the anti-colonial movement, holding the flag of freedom in her hand.

प्रीतिलता वादेदार
(1911–1932)

Preetilata Waddedar
(1911-1932)

बंगाल की महान् क्रान्तिकारी प्रीतिलता वादेदार 'प्रथम क्रान्तिकारी महिला शहीद' थीं जो सूर्यसेन के क्रान्ति दल से सम्बद्ध थीं। उन्होंने केवल 21 वर्ष की अल्पायु में साहस, शक्ति और सूझबूझ पूर्ण बलिदान की अद्वितीय मिसाल कायम की। उनका जन्म मई सन् 1911 में चटगाँव के एक सामान्य परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम श्री जगत्बन्धु और माता का नाम श्रीमती प्रतिभामयी था। प्रीतिलता पढ़ने में कुशाग्र थीं। छात्र जीवन में ही उनका सम्पर्क बंगाल की क्रान्तिकारी महिलाओं द्वारा संस्थापित संगठनों से हुआ। लीला नाग द्वारा स्थापित तथा संचालित 'दीपाल संघ' तथा कल्याणी दास के 'छात्र संघ' से प्रीतिलता ने क्रान्ति का प्रशिक्षण प्राप्त किया और सूर्यसेन के क्रान्ति दल की सदस्य बन गईं।

सूर्यसेन से प्रीतिलता उस समय मिलीं जब वह भूमिगत होकर देशभक्ति से परिपूर्ण क्रान्ति के लिए कार्य कर रहे थे। 18 अप्रैल, सन् 1930 के 'चटगाँव शस्त्रागार कांड' के उपरान्त सूर्यसेन ने छापामार दल का गठन किया जिसकी सदस्य प्रीतिलता वादेदार बनीं।
सूर्यसेन ने एक योजना का निर्माण किया जिसके अन्तर्गत पहाड़ी की तलहटी में बने एक अंग्रेज क्लब पर आक्रमण किया जाना था। इसकी कमान प्रीतिलता को सौंपी गई।

योजना के अनुसार 24 सितम्बर, सन् 1932 की रात्रि को प्रीतिलता अपने क्रान्तिकारी साथियों के साथ गन्तव्य पर गयीं जहाँ गोलीबारी में उनके एक गोली आकर लगी किन्तु वह संघर्ष करती रहीं। आपातकाल देखकर उन्होंने विष की पुड़िया का सेवन किया और स्वतंत्रता की बलिवेदी पर शहीद हो गईं।

प्रीतिलता क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ एक कुशल और प्रभावशाली लेखिका भी थीं। उनके जोशीले तथा तर्कपूर्ण लेखों की पंक्तियों से दल के सदस्य उत्साहित और प्रेरित होते रहते थे। उन्होंने अल्पायु में देश के लिए जो कुछ किया वह अविस्मरणीय है।

Preetilata Waddedar was the first women martyr of the freedom movement. She was a member of the group founded by great revolutionary Surya Sen.

She was born in 1911 in a middleclass family. She was a brilliant student and it was during her student days that she came into contact with the revolutionary women's organisation of Bengal.

She participated in the Chittagong armoury raid on April 18, 1930 under the leadership of Surya Sen. She was given the task of attacking a British club to avenge the death of revolutionaries of the group. On 24th September, 1932, she went with her associates to attack the club and fought bravely. She was hit by a bullet but continued fighting and when arrest was imminent, she gave up her life for the country by consuming potassium cyanide.

In her short 21 years she left an example of fearless devotion to the country, which was also evident through her articles on the freedom movement.

एनी बेसेन्ट

(1 अक्तूबर, 1847–20 सितम्बर 1933)

Annie Besant

(1 October 1847 – 20 September 1933)

1907 से 1933 तक एनी बेसेन्ट थियोसॉफिकल सोसाइटी की दूसरी अध्यक्ष रही। वे महान विदुषी, मानवता वादी, भारत प्रेमी महिला थीं। उन्होंने सक्रियरूप से भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया।

1913 में उन्होंने भारत के लिये होम-रूल की मांग रखी। उनके प्रयत्न से अखिल भारतीय होम रूल लीग बनी और देशभर में यह आन्दोलन फैल गया। भारत के भविष्य के प्रति उनकी चेष्टाओं के कारण सभी भारतीय उनकी श्रद्धा करते थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष भी निर्वाचित हुई। उन्होंने दो पत्रिकाएँ भी आरम्भ की, एक साप्ताहिक जिसमें राष्ट्रीय सुधारों पर चर्चा की जाती थी तथा 'न्यू इन्डिया' दैनिक समाचार पत्र जो 15 वर्षो तक होम रूल का मुखपत्र रहा तथा भारतीय पत्रकारिता को क्रान्तिकारी स्वरूप दिया।

Annie Besant, second President of The Theosophical Society from 1907 to 1933 was an outstanding orator of her time, a champion of human freedom, educationist, philanthropist, and author with more than three hundred books and pamphlets to her credit.

Annie Besant became active in Indian politics in 1913, and gave a lead by claiming Home Rule for India. She entered politics because she saw that India's independence was essential for her age-old wisdom to become a beacon for the whole world. The Home Rule movement she organized spread all over India. She used all her resources to bring together on the common platform of the 'All India Home Rule League' the two sections of the Indian National Congress which had been divided since 1907. Later she was elected President of the Indian National Congress inspiring Indians with a dynamic vision of India's future. She also started two journals: a weekly dealing with issues of national reform; and New India, a daily newspaper which for fifteen years was a powerful instrument promoting Home Rule and revolutionizing Indian journalism.

ऊषा मेहता

(25 मार्च, 1920 - 11 अगस्त, 2000)

Usha Mehta

(March 25, 1920 – August 11, 2000)

ऊषा मेहता देश की महिला स्वाधीनता सेनानियों में से एक है। वे बचपन से हीं देश के स्वाधीन्ता संग्राम से जुड़ गई। 1928 में केवल 8 वर्ष की आयु में उन्होंने साइमन कमीशन के विरूद्ध जुलुस निकाला। गांधीजी के सम्पर्क में आकर उन्होंने खादी को जीवनभर के लिये अपना लिया।

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय ऊषाजी ने गुप्त कांग्रेस रेडियों आरम्भ किया जिसके द्वारा आन्दोलनकारी आपस में तथा जनता के सम्पर्क में रहते थे। इस गुप्त रेडियो सेवा नें भारत छोड़ो आन्दोलन में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1942 से 1946 तक उन्हें बन्दी बना कर रखा गया।

जेल से छूटने के बाद उन्होंने गांधीजी के विचारों पर डॉक्टरेट की तथा बम्बई के विलसन कॉलेज में तीस वर्षो तक अध्यापन किया।

1998 में उन्हें भारत सरकार ने पदमविभूषण से सम्मानित किया। वे आजीवन देश सेवा को समर्पित रहीं।

Senior Gandhian Usha Mehta took the initiative of forming the Manjar Sena with few other girls at the age of eight. The children got together to take out a rally against the Simon Commission in 1928. The children of the Manjar Sena also took out Prabhat Pheris, organized street corner meetings and undertook spinning.

One of the important contributions of Dr Usha Mehta was in organizing the Congress Radio, also called the Secret Congress Radio, an underground radio station, which functioned for few months during the Quit India Movement in 1942. The radio station functioned for few months during 1942. The first words of the broadcast which was her voice was, "This is the Congress Radio calling on 42.34 meters from somewhere in India." The radio broadcast recorded messages from Gandhi and other prominent leaders across India. To elude the authorities, the organizers moved the station's location almost daily.

Even though the Secret Congress Radio functioned only for three months, it greatly assisted the movement by dissemination uncensored news and other information banned the British Government.

She was honoured with the Padmavibhushan in 1998for her services to the nation.

नागालैंड की 'जोन ऑफ आर्क'
रानी गिडालू
(26 जनवरी, 1915)

Rani Gidalu
The Joan of Arc of Nagaland
(January 26, 1915)

स्वतन्त्रता सेनानी नागालैण्ड की रानी गिडालू सन् 1932 में जब 17 वर्ष की थीं, तभी उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध मुक्ति–संग्राम छेड़ दिया था। इस पर उन्हें महिलाओं में सर्वाधिक लम्बी जेल की सजा हुई और वे आजादी के बाद सन् 1947 में ही रिहा हो पाईं।

रानी जी स्वयं तो अंग्रेजों की प्रबल शत्रु थीं ही, परन्तु उनके पीछे उनके हजारों श्रद्धालु विद्रोही नागाओं की जो बड़ी क्रान्ति सेना थी, उससे अंग्रेज और अधिक भयभीत थे।

रानी गिडालू का जन्म 26 जनवरी, सन् 1915 को नागालैण्ड के घने जंगलों के मध्य स्थित एक सुदूर अंचल लांगकाओं में हुआ। उनके पिता नागाओं के पुरोहित थे। रानी गिडालू उस समय अपने कबीले की एकमात्र बालिका थी, जिसने मिशन स्कूल में शिक्षा प्राप्त की थी। सन् 1931 में जब वह 9 वीं कक्षा में पढ़ रही थीं, उनके छोटे भाई 13 वर्षीय जादोनांग ने स्वयं को विशेष नागा दल का नेता घोषित कर अंग्रेजी राज के विरूद्ध स्वतंत्रता का बिगुल बजा दिया। एक अंग्रेज को मारने के अपराध में उसे फाँसी की सजा हो गई। तत्पश्चात् 17 वर्षीय गिडालू उस कबीले की रानी बनी।

कबीले की रानी बनने के बाद उन्होंने भी अंग्रेजों के खिलाफ संग्राम जारी रखा। उनके पास गुरिल्ला युद्ध में पारंगत चार हजार खूंखार नागा अनुयायियों की वालंटियर सेना थी जिन्होंने अंग्रेजी सेना को अनेक बार पराजित किया। कुछ महीनों तक अत्यन्त कठोर संघर्ष चला। 17 अक्टूबर, सन् 1932 को सुबह ब्रिटिश सेना ने अचानक हमला कर दिया और धोखे से रानी गिडालू को गिरफ्तार कर लिया। उनके साथ जंगली जानवर जैसा व्यवहार किया गया और एक मजबूत रस्सी उनकी कमर में बाँधी गई।

देश आजाद होने के उपरान्त ही वह रिहा हो पाई। उसके बाद वह अपने क्षेत्र में आकर कबीले के लोगों की सामाजिक–राजनीतिक समस्याओं के समाधान में जुट गईं।

आजादी की 25 वीं वर्षगाँठ पर राजधानी में लाल किले के दीवाने–ए–आम में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के साथ उनका सम्मान किया गया और 'ताम्र–पत्र' दिया गया। उन्हें नागालैण्ड की 'जोन ऑफ आर्क' कहा गया।

Rani Gidalu was born on 26th January, 1915 in Nagaland. Her father was the priest of a Naga Tribe and young Rani was the only girl of her tribe who studied in a missionary school. Her 13-year-old brother was hanged for killing a Britisher. The spirit of nationalism was in her genes and it was evident that the 17-year-old Rani jumped into the freedom struggle against the British Rule.

She had an army of about 4000 Naga Volunteers, who were experts in guerrilla warfare. The British were defeated many times by these Nagas and greatly feared Rani Gidalu's army of Naga warriors. Rani Gidalu was arrested on 17th October, 1932 and was brutally tortured. The brave young queen did not bend or break.

She was released only after India attained independence and devoted the rest of her life in the service of the people of her region.

She was honoured by the Indian Government on the occasion of the silver jubilee of India's Independence at the Diwan-i-am of Red Fort. She was referred to as the 'Joan of Arc' of Nagaland.

आसाम के वीर शहीद
The Brave Martyrs of Assam

20 सितम्बर 1942 भारत के स्वाधीनता संग्राम का एक स्वर्णिम दिन है। आसाम में गांधीजी की भारत छोड़ो आन्दोलन के 'करो या मरों' के आहवान को यहाँ की वीर बालिकाओं ने साकार कर दिखाया। क्षेत्र के स्थानीय नेताओं ने विरोधा का कार्यक्रम बनाया तथा बरांगाबाड़ी ग्राम की 18 वर्षीय कनकलता बरूआने इस आन्दोलन की पहली शहीद का दर्जा पाया।

कनकलता बरुआ Kanaklata Barua

20 September1942 is also a red letter day in the history of Indian Freedom Struggle. Like in many other places of Assam, preparation for successful implementation of the programme was also at Barangabari under Gohpur Police Satiation in the district of Darrang (at present Sonitpur). The preparation was made by the people of three Mauzas - Kallangpur, Helem and Brahmajan under the leadership of local leaders like Jonaram Bhuyan, Jiten Borah, Lakhi Kanta Bora, Giridhar Barua, Karneswar Hazarika and Mukunda Kakaty. These leaders inspired the local people with the slogan of Gandhiji 'Do or Die'.

Shaheed Kanaklata Barua, who took the leading part in the programme chalked out by those leaders for 20th September, 1942 at Barangabari and ultimately became martyr on the said day, was an unsophisticated village girl of 18 years. She was born on 22nd December, 1924 at Barangabari in a conservative family called 'Dolakasharia' family under Gohpur Police Station.

दुर्गा भाभी
Durga Bhabhi

1928 में अंग्रेज सरकार ने 1919 के भारत शासन अधिनियम की समीक्षा हेतु 'साइमन कमीशन' भारत भेजा जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नही था। भारतीय राष्ट्रवादियों ने इसका विरोध किया। इस कमीशन के बहिष्कार के लिए जगह-जगह विरोध-प्रदर्शन किये गए। ऐसे ही एक बहिष्कार जुलूस का लाहौर में नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय पर पुलिस ने बेरहमी से लाठी चार्ज किया जिससे वे गम्भीर रूप से घायल हुए और कुछ समयोपरान्त उनका निधन हो गया।

'भारत नौजवान सभा' के क्रान्तिकारी साथियों — वीर चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त आदि ने मिलकर बदले की योजना बनाई। भगत-सिंह ने अंग्रेज सार्जेन्ट सान्डर्स को दिन-दहाड़े गोली मार कर मौत के घाट उतार दिया और उनका पीछा करने वाले पुलिस सब-इन्स्पेक्टर को चन्द्रशेखर आजाद ने यमलोक पहुँचा दिया।

अंग्रेज सरकार क्रान्तिकारियों की इस हरकत से बौखला उठी। दुर्गा भाभी क्रान्तिकारी दल के एक सदस्य भगवती चरण बोहरा की धर्मपत्नी थीं। जिनका जन्म इलाहाबाद में 7 अक्टूबर, 1907 को हुआ था। सभी क्रान्तिकारी वीर उन्हें 'भाभी' से सम्बोधित करते थे। और सब उनका सम्मान करते थे।

दुर्गा भाभी ने सरदार भगतसिंह के साथ उनकी पत्नी का वेश बनाकर उन्हें लाहौर से बचाकर सुरक्षित लखनऊ तक पहुँचाया।

इसी बीच 28 मई, 1930 को क्रान्तिकारियों की बम-फैक्टरी में बने बम का रावी के किनारे परीक्षण करते हुए भगवतीचरण बोहरा की मृत्यु हो गई। दुर्गा भाभी पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा, फिर भी वह क्रान्तिकारी-गतिविधियों में लगी रहीं।

1937 से 1982 तक, उन्होंने लखनऊ में शिक्षण केन्द्र चलाया। वह पुनः अस्वस्थता एवं वृद्धावस्था के कारण गाजियाबाद आकर अपने पुत्र शचीन्द्र बोहरा के पास रहने लगीं।

The British had sent the Simon Commission to India to review the Ruling Acts of the Indian Administration but there was not a single Indian in the Commission. The nationalists opposed the Commission and there were massive protest all over the country. The police *lathi* charged on the protesters and in one such incident, claimed Lala Lajpat Rai's life. To avenge his death 'Bharat Naujawan Sabha' members Chandrashekhar Azad, Bhagat Singh, Sukhdev, Rajguru, Batukeshwar Dutt plotted and killed the police officials responsible for Lalaji's dealth.

The British Government went on a massive manhunt spree and the lady who helped the revolutionaries was Durga Bhabhi, wife of a member of the revolutionary group, Bhagwati Charan Bohra. She was greatly respected by the revolutionaries. She helped Bhagat Singh to escape from the British by posing as his wife and took him undetected from Lahore to Luchnow.

Durga Bhabhi continued to help the revolutionaries even after losing her husband in a tragic incident in 1930. She tried to kill the police commissioner when Bhagat Singh, Sukhdev and Rajguru were given death sentence.

A devoted patriot, she also taught in an educational institute established by her in Lucknow from 1937 to 1982. During the later years, due to ill health and old age, she stayed with her son Sachindra Bohra in Ghaziabad.

मैडम भीकाजी कामा
(1861 - 1937)
Madam Bhikaji Cama
(1861-1937)

मैडम कामा पारसी मूल की थीं और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने विदेश में रहकर भारत के सम्बन्ध में फैली तत्कालीन भ्रान्त धारणाओं का खण्डन किया और लंदन, पेरिस, बर्लिन, वियना, जिनेवा आदि की प्रबुद्ध जनता के समक्ष अपनी ओजपूर्ण वाणी, तर्क एवं तथ्यात्मक शैली द्वारा भारतीय स्वतंत्रता पक्ष प्रस्तुत कर साम्राज्यवादियों के दमन चक्र का पर्दाफाश किया।

भीकाजी कामा का जन्म 24 सितम्बर, 1861 को बम्बई (आधुनिक मुम्बई) में हुआ। दिसम्बर, 1885 में 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना हुई, तभी से वह उसकी समर्पित सदस्या बन गईं। कांग्रेसी नेताओं के विचारों एवं ओजपूर्ण भाषणों से प्रभावित होकर वह कांग्रेस की सक्रिय कार्यकर्त्री बन गईं तथा उन्होंने सर्वप्रथम जात-पाँत, ऊँच-नीच, धर्म-मजहब तथा सम्प्रदाय आदि के भेदभावपूर्ण समाज से ऊपर उठकर सभी वर्गों की महिलाओं को एक मंच पर लाने के लिए महिलाओं और महिला संस्थाओं को संगठित करने का बीड़ा उठाया।

उनका विवाह सन् 1885 में श्री रुस्तमजी कामा से हुआ।

डेढ़ वर्ष तक उन्होंने दादाभाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप में कार्य किया जिस दौरान उनका परिचय प्रवासी देशभक्तों एवं विद्वानों से हुआ।

भारतीय झंडे का प्रथम प्रारूप श्रीमती कामा ने अपने क्रान्तिकारी साथियों के साथ मिलकर 1905 में लंदन में तैयार किया था। इस प्रथम प्रारूप में हरा, लाल एवं केसरी तीन रंगों की पट्टियों को मिलाया गया था। ऊपर लाल रंग की पट्टी थी जिसमें आठ खिले हुए कमल तत्मालीन भारत के आठ प्रदेशों के प्रतीक थे। बीच में केसरी रंग की पट्टी में देवनागरी में 'वंदेमातरम्' लिखा था नीचे की हरी पट्टी पर दायी ओर अर्द्ध चन्द्र तथा बाईं ओर उगता सूरज दिखाया गया था। इस झण्डे में लाल रंग को शक्ति का, केसरी को विजय का, हरे रंग को स्फूर्ति तथा उत्साह का प्रतीक माना गया था। सर्वप्रथम यह तिरंगा बर्लिन में और फिर 1909 में बंगाल में फहराया गया था।

1909 को इंग्लिश चैनल के मार्ग से फ्रांस चली गईं जहाँ की सरकार द्वारा सुरक्षा का आश्वासन मिलने पर उन्होंने 1909 में ही 'वन्देमातरम्' पत्र का प्रारम्भ कर दिया।

'वन्देमातरम्' के प्रकाशन द्वारा स्वतंत्रता का शंखनाद करना और क्रान्तिकारियों की हर प्रकार की सहायता करना ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया था।

नवम्बर 1935 में 74 वर्षीय मैडम कामा पुन: बम्बई आयीं जहाँ 13 अगस्त, 1937 को 'मेरा देश स्वतंत्र हो, मेरे हिन्दुस्तान में गणतंत्र की स्थापना हो' कहते हुए उनका महाप्रयाण हुआ।

Madam Cama's contribution to the freedom movement is immense. She was born on 24th September 1861 in an affluent Parsi family. Although brought up and educated in a Western environment, she was a true daughter of the soil. She became a dedicated worker of the Indian National Congress, ever since its inception in 1885 and worked towards bringing women from all sections of the society into the freedom struggle.

The first look of the Indian National Flag was prepared by Madam Cama and her revolutionary friends in London in 1905. It had three colours – a red strip on top with eight lotus flowers depicting the then eight states of India, the centre strip in saffron had *Vande Mataram* written on it, and the lower strip in green showed a crescent moon and a rising sun on the right and left sides respectively. The 'red' colour was the symbol of strength; 'saffron' symbolized victory and the 'green' depicted enthusiasm and energy. This flag was furled for the first time in Berlin and then in Bengal in 1909.

Addressing a press conference in New York, Madam Bhikaji Cama told the reporters that they are aware about the struggles in Ireland and Russia, but should also know about the struggles of the Indians.

In 1909, she went to France and started the paper 'Vande Mataram', which became a symbol of the spirit of Revolution in India.

This great fearless lady returned to Bombay at the age of 74 in 1935. She passed away into eternity praying for the freedom of her country.

मीरा बेन
(1892-1982)

Mira Ben
(1892-1982)

मीरा बेन अंग्रेज़ी मूल की थीं और उनका वास्तविक नाम मेडलिन स्लेड था। उनके पिता, सर एडमण्ड स्लेड ब्रिटिश नौ सेना में एक अधिकारी थे।

मीरा बेन (मेडलिन स्लेड) का जन्म 22 नवम्बर, सन् 1892 को एक कुलीन, उच्च संस्कृति वाले अंग्रेज परिवार में हुआ। मेडलिन स्लेड ने त्याग और सादगी को अपनाया।

रोमाँ रोलां ने उनमें महान् आध्यात्मिक जिज्ञासा का अनुभव किया और उन्हें गाँधीजी के बारे में बताया जिन्हें वे द्वितीय ईसा मानते थे। मीरा बहन ने गांधीजी से पत्र-व्यवहार किया और 25 अक्टूबर, सन् 1925 को रवाना होकर 6 नवम्बर, सन् 1925 को बम्बई पहुँचीं और फिर 7 नवम्बर को साबरमती आश्रम। गाँधीजी से पहली भेंट में वह अत्याधिक चकित हो गईं जिसका वर्णन उन्होंने अपनी आत्मकथा 'द स्प्रिट्स पिलग्रिमेज' में किया है।

गाँधीजी ने उन्हें अपनी पुत्री माना और उन्हें मीरा बेन नाम प्रदान किया। उन्होंने कताई और बुनना सीखा और खादी कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने समस्त देश से ब्रिटिश सरकार की क्रूरता की सूचनाएँ एकत्रित करके विदेशों जैसे—इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी और स्विट्जरलैण्ड में भेजी क्योंकि उस समय भारत में समाचार पत्रों पर कठोर सेंसरशिप लगा दी गई थी।

उन्होंने हरिजनोद्धार के कार्यों में भी भाग लिया और सन् 1938 में इस हेतु गाँधीजी के साथ उड़ीसा का दौरा किया। इसके लिए व्याख्यान देने वह इंग्लैण्ड और अमेरिका भी गईं।

भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान मीरा बेन आगा खां महल में 11 अगस्त, सन् 1942 से 6 मई, सन् 1944 तक नजरबन्द रहीं।

स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रोत्तर उनके द्वारा भारत के लिए किये गए प्रयास सराहनीय हैं। सन् 1979 में उन्हें भारत सरकार की ओर से 'पद्म विभूषण' प्रदान किया गया। वह ऑस्ट्रिया में, वियना से 50 मील दूर एक गाँव में रह रही थीं वहाँ 20 जुलाई, सन् 1982 को उनका देहान्त हो गया। वह निश्चित ही चिरस्मरणीय रहेगीं। उन्हें शतशः नमन्।

Mira Behn was the daughter of a British Naval Officer, Sir Edmund Slade and she had spent a few of her childhood years in India when her father was posted in Bombay. She was a simple and austere person devoted to the ideals of Mahatma Gandhi.

The renowned French Scholar Romain Rolland introduced her to Gandhiji through his biography on him and she was greatly influenced by him.

She corresponded with Mahatma Gandhi and came to India in November 1925 and met Gandhiji for the first time on 6th November 1925 at Sabarmati Ashram. She writes about him in her autobiography: The Spirit's Pilgrimage.

Gandhiji took to her as a daughter and renamed her Mira Behn. She learnt to spin and weave and participated in Khadi related activities. She participated in the freedom movement and was arrested many times. She collected the stories of British atrocities and sent them to England, France, Germany and Switzerland, as there was strict censorship of all Indian newspapers.

She worked for the upliftment of the untouchables, and went around the country with Gandhiji for raising funds for the Harijans.

She continued to work in India even after the assassination of Mahatma Gandhi. The Indian Government honoured her with the 'Padam Vibhushan', in recognition of her selfless service to India. She passed away on 20th July, 1982 in a village near Vienna, but her heart and spirit always remained with India. Her life was an example of selfless service towards India.

विजयलक्ष्मी पण्डित
(1900-1990)

Vijaylakshmi Pandit
(1900-1990)

विजयलक्ष्मी पण्डित का प्रारम्भिक नाम स्वरूप कुमारी था। उनकी माता स्वरूपरानी तथा पिता पण्डित मोतीलाल नेहरू थे। उनका जन्म 18 अगस्त, सन् 1900 को हुआ था।

उनका राजनीतिक जीवन शीघ्र ही प्रारम्भ हो गया था। जब सन् 1935 के भारत शासन अधिनियम के अन्तर्गत सन् 1937 में प्रान्तों में कांग्रेस की सरकारें बनीं और केन्द्र में द्वैत शासन की स्थापना हुई तो उन्हें उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रान्त) की केबिनेट मन्त्री बनाया गया जिससे वह भारत की प्रथम (और विश्व की द्वितीय) महिला केबिनेट मन्त्री कहलाई। उन्हें स्वास्थ्य एवं स्वायत्त-शासन मन्त्रालय दिया गया। इससे पूर्व सन् 1932 में, उन्होंने इलाहाबाद में भीड़-भरी सार्वजनिक सभा को संबोधित किया और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा ली।

वे आजीवन देश की स्वाधीनता के लिये लड़ीं तथा प्रत्येक जन आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। स्त्रियों के अधिकारों के लिये भी उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण प्रयास किये।

स्वाधीन भारत में वे दो बार संसद के लिये निर्वाचित हुईं। 1846 में संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा की प्रथम निर्वाचित महिला अध्यक्ष बनीं। 1947 में वे भारत की महिला राजदूत बनीं।

Smt. Vijaylakshmi Pandit was the daughter of Motilal Nehru and Swaroop Rani and the younger sister of Pt. Jawaharlal Nehru. She was born on August 18, 1900.

Her family background initiated her in politics at a very early age and over the years she rose to various prestigious positions in pre, as well as post independent India.

She did a lot of significant work for the upliftment and empowerment of women. She was elected to the Parliament twice. She was the first woman leader of United Nations delegation.

In 1953, she became the first elected president of the UN General Assembly. She also held the distinction of being the first woman ambassador of the country in various countries.

She remained active, agile, alert and dedicated all her life to the services of the country. Her charismatic leadership was indeed a source of inspiration.

आजादी के संघर्ष में राजपूताना की स्त्रियों का अवदान

The role of Rajputana Women in the Freedom Struggle

आधुनिक काल में भारत की अंग्रेज सरकार ने राजपूतों से संबंध बढ़ाने का प्रयास किया और सन् 1818 तक समस्त राजपूत राज्यों को अपने अधीन कर लिया। परन्तु राजपूताने की जनता में स्वतंत्रता प्राप्त करने की ललक शीघ्र ही जाग उठी, जिसका स्पष्ट प्रमाण सन् 1857 में होने वाले स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम में उसने भाग लेकर दिया। इसके लिए वीर स्त्रियों ने भी पुरुषों को प्रेरणा दी।

राजपूताने की नारियों में स्पष्ट रूप से राजनीतिक जागृति बीसवीं सदी में आई, जब उन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने का निश्चय किया। राजस्थान में इस दौरान जितने भी किसान आंदोलन हुए उन सबमें स्त्रियों ने भी पूरे जोश से भाग लिया। ये किसान आंदोलन स्वतंत्रता के प्रयास की ही कड़ियाँ थीं और नारियाँ उनकी शक्ति।

By 1818, the British had taken control over all the Rajput states. The people of Rajputana were eager to gain independence from the foreign regime. The great *war of independence* in 1857 was the evidence of the Rajputana women's role in the war for the liberation of the motherland from the Britishers.

The brave women of the state were a great source of inspiration. The Twentieth Century Rajput women were equal partners with men in the national struggle. Their valour and fearlessness was a subject of discussion in the British quarters. They were looked with both awe and respect. The Rajputana women won the admiration of the Britishers too for their valour and finesse.

All the peasant movements in this period saw a large number of women participation. These movements gained their strength from the brave women folk who came out in the open to face the batons of the Raj. Out from their homes, their struggle tells the tale of their undaunted toil to free the motherland from the oppression of the Raj.

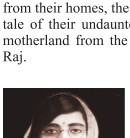

कमला नेहरू
(1900–1936)
Kamala Nehru
(1900-1936)

एक परम्परावादी कश्मीरी पण्डित परिवार में सन् 1900 में जन्मी कमला कौल का विवाह 2 फरवरी, सन् 1916 को श्री जवाहर लाल नेहरू से इलाहाबाद में हुआ। यद्यपि वह अधिक शिक्षित नहीं थीं, तथापि स्वाधीनता–आन्दोलन और गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के बारे में संवेदनशील थीं। उन्होंने अपने पति श्री जवाहरलाल नेहरू को स्वतन्त्रता आन्दोलन में शरीक होने और पाश्चात्य एवं रेशमी पहनावा छोड़कर खादी के वस्त्र पहनने के लिए प्रेरित किया।

श्रीमती कमला नेहरू भी संघर्ष में हमेशा पति के साथ रहीं। सन् 1931 के अन्त तक उनका स्वयं का स्वास्थ्य बिगड़ने लग गया था। तब भी वह इलाहाबाद जिला–कांग्रेस की अध्यक्ष के रूप में राजनीति में क्रियाशील रहीं और सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया।

कमला जी ने 'नेहरू परिवार के स्वराज्य भवन' के परिसर में एक अस्पताल की स्थापना में सहायता की।

सन् 1929 में वर्ष भर राजनीतिक तनाव जारी रहा। जवाहर लाल नेहरू जी ने इस समयावधि में कमला जी के कार्यों के सम्बन्ध में लिखा : ''इस उथल–पुथल में, कमला ने साहसपूर्ण एवं उल्लेखनीय भाग लिया, जब प्रत्येक विख्यात एवं नामी कार्यकर्ता जेल में बन्द था, इलाहाबाद शहर में उसके अनुभवहीन कन्धों पर हमारे कार्य को संगठित करने का भार आ पड़ा। उसकी अग्नि और ऊर्जा द्वारा इसमें प्रगति हुई और वह कुछ माहों में ही इलाहाबाद का गौरव बन गईं।''

उनका स्वास्थ्य नहीं सुधर सका और 28 फरवरी, सन् 1936 को 37 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया। गाँधी जी ने उनकी मृत्यु पर अपने संदेश में कहा : ''मैं इससे पूर्व एक सत्यवादी, बहादुर और ईश्वरनिष्ठ स्त्री को नहीं जान पाया था।''

उनका अगला जीवन उनकी पुत्री इन्दिरा प्रियदर्शिनी के रूप में था जिन्होंने उनका छोड़ा हुआ काम पूर्ण किया और यह सिद्ध कर दिया कि पुत्रियाँ पुत्रों से किसी भी प्रकार से कम नहीं होती।

Kamala Nehru was born in a Kashmiri Pandit family in 1900. She was married to Jawaharlal Nehru on February 2, 1906. Although she was not well-educated, but, from an early age, she grew very sensitive towards the national concern. She joined the freedom struggle alongwith her husband, Pt. Nehru and gave up her luxurious living.

By 1931, despite her failing health, she continued her political activities and participated in the Civil Disobedience Movement. She also helped, set up a hospital in Swaraj Bhawan.

Pt. Jawaharlal Nehru writes about her:

In severe turmoil, Kamla continued to work bravely, when almost all the leaders and workers were in jail, the task of organising nationalist activities fell upon her frail shoulders. She provided her inherent fire and energy to this and soon became the pride of Allahabad.

In July 1934, Kamala suffered a severe attack of Pleurisy and died on February 28, 1936, at the young age of 37.

Gandhiji in his tributes to this great leader said: "*I did not know a more truthful, brave and Godly lady".*

As her legacy, she gave the nation, her daughter, Indira Priyadarshani – who became the first Prime Minister of an independent India – an example of immense courage and dedication to the nation.

मृदुलाबेन साराभाई

(1911–1974)

Mridulaben Sarabhai

(1911-1974)

मृदुलाबेन का जन्म सन् 1911 में अहमदाबाद में श्री अम्बालाल साराभाई एवं श्रीमती सरलादेवी साराभाई के यहाँ हुआ, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही देश की आजादी की लड़ाई में होम कर दिया था। उन्हें स्कूली शिक्षा के साथ ही देशभक्ति एवं राजनीति का प्रशिक्षण बचपन से ही मिलना प्रारम्भ हो गया। बड़ी होने पर उन्हें महात्मा-गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू जैसे मूर्धन्य राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में आने एवं उनके साथ राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय होने का अवसर मिला।

मृदुला जी ने स्वतन्त्रता आंदोलन के अनेक मोर्चों पर कार्य किया और अपनी सक्रिय कर्मठता के बल पर राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। उन्होंने मुख्य रूप से गुजरात की महिलाओं को संगठित किया और उन्हें राष्ट्रीय महत्त्व एवं आजादी के प्रति जागरूक किया।

16-17 वर्ष की आयु में ही उनके जीवन तथा विचारों में परिपक्वता आ गई थी। सन् 1930 की दाण्डी-यात्रा, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार तथा शराब की दुकानों पर धरने आदि देने के कार्यों में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1931 में गाँधी-इरविन समझौता से पूर्व हुए सत्याग्रह में भी उन्होंने अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया।

सन् 1937 में हुए राजकोट सत्याग्रह एवं जम्मू-कश्मीर सम्बन्धी राष्ट्रीय परिषद् में भी उन्होंने कार्य किया। सन् 1941-42 में हुए आन्दोलन एवं सत्याग्रह और सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभायी। महात्मा गाँधी ने उनकी योग्यता, कर्मठता एवं बुद्धिमता की सराहना की।

सन् 1945-46 में उन्होंने 'कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट' में संगठन-मंत्री पद का कार्यभार सम्भाला।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व हुए साम्प्रदायिक दंगों से उत्पन्न हुई विषम परिस्थितियों में मृदुला जी द्वारा किए गए रचनात्मक एवं सद्भावनापूर्ण कार्य उल्लेखनीय रहे।

Mridulaben Sarabhai was born to Shri Ambalal and Sarladevi Sarabhai in 1911 in Ahmedabad. Her parents were true nationalists and she also imbibed the same values very early in life.

She came into contact with Mahatma Gandhi, Pandit Jawaharlal Nehru and other national leaders and got actively involved in the freedom movement. She brought together the women of Gujarat to garner their strength and giving them the confidence to use it.

Her participation in the Dandi March, boycott of foreign clothes, picketing at wine shops, defying the orders passed by the British Government during the Civil Disobedience Movement are great contributions. She also took part in the Quit India Movement of 1942. Fearless and die-hard patriot, Mridulaben Sarabhai was imprisoned several times. Mahatma Gandhi greatly appreciated her services to the freedom movement.

सुभद्रा कुमारी चौहान

(1904–1948)

Subhadra Kumari Chauhan

(1904-1948)

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम सर्वप्रसिद्ध है क्योंकि उनके द्वारा रची गई कविता 'खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी' ने अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है। बुंदेलखण्ड की लोकशैली की इस कविता पर, यद्यपि अंग्रेज सरकार ने प्रतिबन्ध लगाया, तथापि यह जनसामान्य के कण्ठ का हार बन गई।

सुभद्रा जी ने केवल कलम की ही धनी नहीं थी, अपितु उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर और आर्थिक कष्ट सहकर उसमें अपना अमूल्य योगदान दिया।

सुभद्रा जी ने जबलपुर में 'तिलक-राष्ट्रीय विद्यालय' के माध्यम से महिलाओं में सामाजिक जागृति एवं राष्ट्रीय चेतना जगाने तथा स्वयंसेवकों को संगठित करने आदि का कार्य प्रारम्भ किया।

उन्होंने 'झांसी की रानी' कविता लिखी। इस कविता की प्रशंसा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भी की और जब उन्होंने आजाद हिन्द फौज की कमान सम्भाली तो उसमें महिलाओं की 'रानी लक्ष्मी बाई रेजिमेंट' भी बनाई।

सन् 1932 में गाँधी जी भी उनकी कविताओं से प्रभावित हुए और उनके त्याग को सम्मान देने के लिए सन् 1936 के चुनाव में जबलपुर की सुरक्षित महिला सीट हेतु सरदार वल्लभ भाई पटेल ने उनका नाम प्रस्तावित किया और सुभद्रा जी निर्विरोध निर्वाचित हो गईं।

सन् 1941 में 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' में भी उन्होंने भाग लिया।

निश्चित ही उनके व्यक्तित्व में सफल लेखिका, जागरूक राजनीतिज्ञ, कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्री तथा परम देशभक्त व्यक्ति के गुणों का सहज समावेश था। उन्हें शत्-शत् नमन्।

Subhadra Kumari Chauhan immortalized Rani Lakshimibai in her poem ***Khoob Ladi Mardani.*** It was with the same spirit and zeal that Subhadra Chauhan joined the National Movement for independence.

In Jabalpur's *Tilak Raj Vidyalaya* she organized the women folk, making them aware of their power. It was under her leadership that women came out of their homes to join the freedom movement.

Mahatma Gandhi greatly respected her. In the 1936 elections, Sardar Vallabhbahi Patel proposed her name for the reserved seat for women. Her popularity was such that she was elected unopposed from Jabalpur.

She participated in the Individual Satyagraha in 1942 and was also imprisoned. Subhadra Kumari Chauhan's personality had the combined virtues of a good author, an alert politician, an active social worker and a devoted patriot.

इन्दिरा प्रियदर्शिनी
(1917-1984)

Indira Gandhi
(1917-1984)

अदम्य साहसी माता की साहसी पुत्री इन्दिरा प्रियदर्शिनी का जन्म 19 नवम्बर, 1917 को इलाहाबाद के 'आनन्द भवन' में हुआ।

इन्दिरा जी के शैशव काल में अनेक राजनीतिक घटनाएँ हुईं जिनका प्रभाव उनके बालमन पर पड़ा। सन् 1919 में जब जलियावाला कांड हुआ तो वह मात्र दो वर्ष की थीं। उनके दादा का घर कांग्रेस की गतिविधियों का केन्द्र बनता गया तथा नित्य प्रति किसी न किसी घटना पर जुलूस निकलने लगे। जिनका प्रभाव इन्दिरा के बालमन पर भी पड़ा। विदेशी वस्त्रों की होली जलाना भी एक आम कार्यक्रम बन गया। कृष्णा हथीसिंह उनकी बुआ ने, अपनी पुस्तक 'इन्दु से प्रधानमंत्री' में लिखा है: ''इन्दिरा को विदेशी कपड़ों की होली जलाने में खूब आनन्द आता था। गाँधी जी का कहना था कि विदेशी माल का बहिष्कार किया जाय। कमला और अम्मा की सुन्दर कीमती रेशमी और जरी की साड़ियाँ भी आग में होमी गई थीं और नन्हीं इन्दिरा ने फैसला कर लिया कि विदेशी कपड़ों की होली जलाना बिल्कुल सही काम है। उनका दैनन्दिन जीवन राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ था।''

हमें भी स्वतन्त्रता की लड़ाई में अपना भाग पूर्ण करना चाहिए। इसलिए मेरा सुझाव है कि हम सब बच्चे मिलकर एक अपना ही सेवा दल बनाएँ।

इन्दिरा जी ने अपने इस स्वयंसेवक दल का नाम 'वानर सेना' रखा। उन्होंने अपने बाल स्वयंसेवकों को रामायण स्मरण कराते हुए कहा कि जिस प्रकार वानरों ने श्री राम की सहायता की थी उसी प्रकार हम भी स्वतन्त्रता संग्राम में अपना कार्य करेंगे।

'वानर सेना' उसी दिन से अपना काम करने लगी। गली-गली में राष्ट्रीय नारे लगाए जाने लगे। न केवल इतना बल्कि वानर सेना के बाल सैनिक झंडे बनाने, उन्हें बाँटने, लिफाफों पर पते लिखने, जलसे-जुलूसों में पानी पिलाने आदि कार्य भी करने लगे।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी का एक लम्बा राजनीतिक जीवन रहा। वह राजनीति की गोद में ही उत्पन्न हुई थीं, उसी में पली-बढ़ीं और उसी की गोद में समा गईं। उन्होंने वैधव्य झेला (8 सितम्बर, 1960), पिता की मृत्यु का कष्ट सहा (17 मई, 1964), अपने छोटे पुत्र संजय की मौत का दुःख झेला (23 जून, 1980)। राजनीति में जय, पराजय, कठोर निर्णय लेना, देश-विदेश के सम्बन्ध में कार्यवाही, बैंकों का राष्ट्रीयकरण बांग्लादेश का निर्माण इत्यादि अनेक बातें उनके जीवन में विलक्षण रूप से हुईं।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी को 31 अक्टूबर, 1984 को उनके अंगरक्षकों बेअन्तसिंह और सतवन्त सिंह ने गोली मार दी। देश की स्वतन्त्रता हेतु किए गए प्रयासों और स्वतन्त्र होने के उपरान्त इस देश की आजादी को अक्षुण्ण बनाने हेतु उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

Indira Priyadarshani was born to Kamala and Jawaharlal Nehru on November 19, 1917 at Anand Bhavan, Allahabad. The little Indira was witness to almost all the major landmarks of the nation's Independence Movement under Mahatma Gandhi's leadership.

Her aunt Krishna Hutheesingh, in her book "Indu to Prime Minister" writes:

Child Indira was very excited to burn foreign goods. Amma and Kamala's beautiful sarees had already been thrown into the bonfire and Indu felt it was very right to burn foreign cloth. Her daily life was integrated with the freedom movement".

As a child, Indira formed a band of children to help the freedom fighters in small, but significant ways – like volunteering to make and distribute flags, pamphlets, serve water at gatherings, pasting letters, etc.

She named this band as 'Vanar Sena', equating it with Sri Ramchandra's Vanar Sena, which had conquered Lanka and helped him rescue Sita.

Indira Gandhi had an illustrious life, dotted with personal triumphs and tragedies. She was raised in the midst of political turmoil, lived it and died in it. She became the first woman Prime Minister of the country and led the nation to progress and prosperity through various socio-economic measures.

She was gunned down by her own security guards on October 31, 1984. But her legacy towards the building of new India remains with us.

सिस्टर निवेदिता

(1867-1957)

Sister Nivedita

(1867-1957)

भगिनी निवेदिता मूल रूप से आयरिश थीं तथा उनका जन्म नाम मार्गरेट नोबल था। उनका जन्म 28 अक्तूबर सन् 1867 को हुआ था।

स्वामी जी द्वारा एक वार्ता में उपस्थित होने के लिए उन्हें निमन्त्रित किया गया। वह उनके तेजोमय व्यक्तित्व से अत्याधिक प्रभावित हुईं जो उनकी वाक्पटुता एवं वेदान्त में गहन ज्ञान से प्रदीप्त हो रहा था।

मार्गरेट स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन से इतनी प्रभावित हुईं कि उनका हृदय पाश्चात्य दृष्टिकोण से दूर होकर आध्यात्मिक दर्शन की ओर चला गया। भारत के प्रति स्वामी जी की तीव्र निष्ठा और अपने लोगों को निर्धनता एवं दुर्दशा से निकालने के साधनों की प्राप्ति हेतु उनके दृढ़ निश्चय से मार्गरेट नोबल को गहरे रूप से आकर्षित किया।

स्वमी जी ने सुश्री नोबल से कहा, ''मेरे पास मेरे देश की स्त्रियों के लिए योजनाएँ हैं जिसमें, मैं सोचता हूँ, आप सहायता कर सकती हैं।''

वह सन् 1896 में भारत आईं और यहाँ की गतिविधियों में सम्मिलित हुईं। उन्होंने स्त्री-शिक्षा के माध्यम से भारत की महानता को पुन: स्थापित करने का प्रयाय किया और यहाँ की आवश्यकताओं को सदैव अपने ध्यान में रखा।

सुश्री मार्गरेट जो अब भगिनी निवेदिता बन गई थीं, ने कलकत्ता (कोलकाता) में बालिकाओं की शिक्षा का प्रबन्ध किया और एक विद्यालय की स्थापना की।

वह बहुसर्जन लेखिका थीं तथा अपने डायरी एवं नोट्स रखती थीं। वह 'मॉर्डन रिव्यू' एवं अन्य जर्नल्स की नियमित अंशदाता थीं।

भगिनी निवेदिता बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी। कला, साहित्य और मानवता में वह रूचि रखती थीं।

आज हिमालय की गोद में स्थित दार्जिलिंग जहाँ शान्ति सर्वोच्च है, सादगीपूर्ण स्मरणीय शब्द गूँजते हैं, ''यहाँ भगिनी निवेदिता विश्राम कर रही हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व भारत को दिया।''

Born as Margaret Elizabeth Noble to an Irish family on October 28, 1867, Sister Nivedita met Swami Vivekananda in Chicago when he had to come to attend the World Religious Conference and was greatly impressed by his religious depth.

She was deeply attracted by his vision of improving his nation's destiny with particular emphasis on the upliftment of women and youth. She was told by Swamiji that "I have some plans for the women folk of my country and I am certain that you could help me in implementing them".

Responding to the call, leaving behind her family and friends, including her mother, Margaret agreed and came to India in 1896. She started working for the betterment of Indian women through socio-educational activities.

She started a school for girls in Kolkata and even taught children by going to their homes.

She was a prolific writer too and kept diaries and notes, besides contributing to nationalistic journals.

Sister Nivedita passed into eternity on October 2, 1957 in Darjeeling. As per her wish, she was cremated in traditional Hindu rites. The hills where she breathed her last reverberate with the memorable tribute to her that: "Here rests Sister Nivedita, who gave her everything to India".

स्वाधीनता संग्राम में आदिवासी महिलाओं की भूमिका

The contributions of the Tribal Women in the Freedom Movement

अपनी संस्कृति और परम्परा की रक्षा के लिये भारत की आदिवासी महिलाओं का निर्भीक योगदान अविस्मरणीय है। महिलाएँ समाज के प्रत्येक बदलाव की परिचायक हैं और हर आन्दोलन में उनका सक्रिय सहयोग ही उसे सफल बनाता है।

आदिवासी आन्दोलनों में यह प्रमाण मिलता है कि किस प्रकार अन्याय-अत्याचार के विरूद्ध महिलाओं ने निडर साहस का परिचय दिया। 1772 का मालपहाड़िया विद्रोह, पुआर विद्रोह (1827-1830), कोल विद्रोह (1831-32) खोन्ड विद्रोह (1846) संथाल विद्रोह (1855), धनबाद विद्रोह (1869-70), सरदार विद्रोह (1887), बिरसा आन्दोलन (1895), ताना भगत विद्रोह (1914) इन सभी में महिलाओं की सामाजिक, राजनैतिक भागीदारी देखी गई है।

संथाल विद्रोह में महिलाओं द्वारा अपनाई गोरिल्ला युद्ध पद्धति से अंग्रेज भयभीत थे। अनेक विद्रोहियों को उन्होंने फांसी पर लटकाया, परन्तु विद्रोह की गति नहीं थमी। बंगाल के लोकसंगीत में इन वीर महिलाओं का मार्मिक विवरण मिलता है जहाँ यह भाव व्यक्त किये गए हैं कि किस प्रकार अंग्रेजों ने क्रूरता से संथालों को मारा, रक्त की नदियाँ बहती रहीं, 250 गाँवों में एक भी संथाल पुरूष जीवित नहीं बचा और उनके परिवार की महिलाएँ अकेली रोती रह गई।

आदिवासी किसान महिलाओं ने डट कर अपने अधिकारों और जमीन की लड़ाई लड़ी। पूरे बंगाल में फैला यह विद्रोह ऐतिहासिक था क्योंकि इस लड़ाई को 1946 में नारी वाहिनी लड़ रही थी। इस दल का नेतृत्व मैमनसिंह की रसमणि कर रहीं थीं जिन्होंने अपनी साथियों के साथ अंग्रेजों की गोलियाँ झेली।

संथाल विद्रोह का प्रमाण अंग्रेजों की जेलों के दस्तावेजों में मिलता है जहाँ पर उन अनगिनत आदिवासी महिलाओं का वर्णन है जिन्हें विद्रोह करने तथा विद्रोहियों की सहायता करने के लिये बन्दी बनाया गया था।

विद्रोह में संथाल महिलाओं की भूमिका इस लोकगीत में इस तरह वर्णित है जहाँ वे पुरूषों से कहती हैं- ''हम सिपाहियों को शराब पिलाएंगे, और जब वे नशे में चूर हो जाएँगे, हम उन्हें प्रेम का छलावा देंगे - तब तुम लोग लड़ाई करने जाना।''

प्रसिद्ध आदिवासी नेता तिलका मांझी ने 1784 में संथाली महिलाओं को गुरिल्ला रणनीति में दक्ष बना दिया था। इसी प्रकार बिरसा आन्दोलन के समय महिलाओं ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे गर्भवती का छद्मवेश धारण कर वस्त्रों में तीर छुपाकर अंग्रेज़ सिपाहियों को छलती थीं।

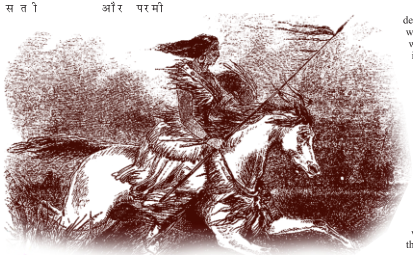

नामक महिलाएँ सदैव बिरसा के साथ उनकी सुरक्षा के लिये तैनात रहतीं थीं।

परिवार की महिलाएँ नेपथ्य में रह कर भी विद्रोहियों की सहायता करतीं थीं, उनका ख़्याल रखती थीं। बिरसा मुण्डा की माँ कर्मा ग़रीबी में भी विद्रोहियों को आश्रय देतीं थीं, भोजन खिलाती थीं।

आदिवासी महिलाओं की निर्भीकता, जागरूकता ने देश के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन को अद्भुत गरिमा प्रदान कीऔर महात्मा गांधी के कथन को साकार किया कि 'नारी अबला नहीं सबला है।'

The triumphant emergence of tribal women in the freedom movement is an example of how women have taken their inch of ivory by their selfless service to preserve their culture and traditions.

The history of Tribal movements like the Malpaharia rising (1772), Chuar or Paik rebellion (1827-1830), Kol insurrection (1831-32), Khond rising (1846), Santhal rebellion (1855) Unrest in Dhanbad (1869-70), Sardar agitation (1887), Birsa Movement (1895), Tana Bhagat movement (1914), Indian National Movement, indicate the participation and involvement of women. They further indicate the development of social consciousness among the community.

The chivalrous deeds and guerrilla warfare, in which women participated in the Santhal movements, left the British baffled. The rebels were hanged but the movement continued.

The result of the rebellion is vividly expressed in Bengali folksongs which express these feelings:

The Santhal first bowed down before many sepoys, blood began to flow like river. The English went back for a while put the kamani and started firing. No body of 250 Santhal villagers remained alive, and their women went crying on the way alone without their man.

Women peasants fought for their rights and land. Spread throughout Bengal, including present Bangladesh in 1946, just before the Britishers left, the unique feature of the Tebhaga Movement was that a large number of landless peasant women formed the **Nari-Bhanini** – a fighting troop under the leadership of women comrades. Mymen Singh Rasmony – a tribal widow was leading the **Nari Bahini** and fought against the Eastern-Front Rifles till her death.

The Santhal uprising witnessed a large number of women taking active part in the rebellion against the British. Judicial record of the British Government still keeps the evidences of the Santhal women prisoners who were held either for conspiracy for providing help to the rebels. Many of them died in the prison due to cholera.

This Bengali song often sung by the Santhal women clearly depicts the role of the Santhal women in the rebellion:

Mora mad khaoabo, nesa korbo
Angrejder man bhoolabo,
Ladai jabi tora.

(We will make the sepoy drink
We will make them drunken
We will deceive them by our love,
You will go for fighting)

Under the leadership of Tilka Manjhi, tribal women directly involved themselves in warfare in 1784. Manjhi was the first man in the history who organized and trained the Santhal women's group for guerrilla warfare.

Similarly in the Birsa Movement or Ulgulan, the women associated themselves at every step. Many of them pretended as being pregnant and kept arrows hiding within body, and thus they deceived the sepoys. Fearlessness was within their genes. Women like Sati and Parmi were always with Birsa and kept a close watch at him, guarding him at every step.

There were others who remained behind the scene and inspired men from the tribal community to fight the oppressors. Birsa Munda's mother Karman was a witness of all events. Inspite of utter poverty, she cooked for him and his partners who took shelter in her house. Her contributions in this regard were immense.

All these movements gradually raised the socio-political consciousness among the Santhal women which again reflected through their participation in the Indian National Movement under the leadership of Mahatma Gandhi. It was during these movements that their consciousness ventures to nationality from mere ethnicity.

नारी शक्ति
महात्मा गांधी के उद्‌गार

Nari Shakti
Tribute by Mahatma Gandhi to Women: Strength Incarnate

राजकुमारी अमृत कौर लिखती हैं : ''इतिहास के किसी महापुरूष को इतनी श्रद्धा से स्मरण नहीं किया जाता है जितना गांधीजी को। और वास्तव में स्त्रियों में उनके प्रति हार्दिक भक्ति भी अद्‌भुत है।''

गांधीजी ने सदा ही अन्याय का विरोध किया और इसीलिये वे चाहते थे कि महिलाएँ अपनी शक्ति के प्रति जागरूक हों। इस कार्य को उन्होंने स्वयं अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी को पदोचित गरिमा देकर आरम्भ किया।

अपने प्रत्येक कार्यक्रम में संगठन में गांधीजी ने बालिकाओं तथा महिलाओं को समान अधिकार दिये। उनके साथ जुड़ी सभी बालिकाओं, स्त्रियों को स्वाधीनता तथा आत्म-विश्वास में अद्‌भुत शक्ति थी। साबरमती से सेवाग्राम, दाण्डी से भारत छोड़ो आन्दोलन तक, शोषण से मुक्ति तक यही परिलक्षित है।

सेवाग्राम से 12 फरवरी 1940 में वे लिखते हैं ..... ''स्त्री..... गर्भावस्था के दौरान सारे कष्ट सहकर कोख में शिशु को पालती है और जन्म देती है .....प्रसव की पीड़ा से बड़ा क्या कष्ट है.....परन्तु सृष्टि के आनन्द में वह सब कष्ट भुला देती है.....यही प्रेम उसे पूरी मानवता में फैलाना है.....''

स्वाधीनता आन्दोलन में स्त्रियों के योगदान के विषय में एक भाई के समान वे अपनी बहनों से कहते हैं ''.....आपका त्याग क्रोध और घृणा से अछूता है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि आपके योगदान से मुझे फिर विश्वास दिलाया है कि ईश्वर हमारे साथ है। हमारे संघर्ष की आत्मशुद्धि का यही सबसे बड़ा प्रमाण है कि भारत की लाखों करोड़ों महिलाएँ स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है।'' यंग इण्डिया, 11-8-21,

वे आगे कहते हैं ''.....भारत के बच्चों को आप माताएँ ही सरल, ईश्वरनिष्ठ और बहादुर बना सकती हैं .....भारत का भविष्य आपके हाथों में सुरक्षित है।''

Rajkumari Amrit Kaur writes:

No leader in history has commanded such a large following during his lifetime, either in his own country or the world, as Gandhiji. And certainly no man has evoked such whole-hearted devotion from women.

A passionate lover of humanity, an implacable foe of injustice in whatsoever form or sphere, it is small wonder, that Mahatma Gandhi espoused early the women's cause, beginning from within his home – his wife Kasturba Gandhi.

In his own institutions and programme of work, he has paid equal attention and given equal place to girls and women. There was an air of freedom and self-confidence of the women who came under the influence of Gandhiji – from Sabarmati to Sevagram, from Dandi to Quit India Movement, from the period of suppression to the phase of liberation.

In his own words, Gandhiji says: *Woman is the embodiment of sacrifice and suffering.* Nothing delighted him more than the success of women in every sphere of life.

From Sevagram, on 12-2-'40, Mahatma Gandhi writes: … *She shows it as she carries the infant and feeds it during nine months and derives joy in the suffering involved. What can beat the suffering caused by the pangs of labour? But she forgets them in the joy of creation… Let her transfer that love to the whole of humanity…"*

Referring to the contributions of women in the freedom struggle, as a devoted brother, Mahatma Gandhi on 11-8-'21 in *Young India*, writes *To the Women of India*:

…Yours is the purest sacrifice untainted by anger or hate. Let me confess to you that your spontaneous and loving response all over India has convinced me that God is with us. No other proof of our struggle being one of self-purification is needed than the lakhs of Indian women are actively helping it.

He continues…

You can bring up the children of India to become simple, god-fearing and brave men and women.

…The destiny of India is far safer in your hands…"